(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 53, अंक 10, अप्रैल, 2018
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1

2

1. शान्तिवन- अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन तथा सांस्कृतिक महोत्सव का उद्घाटन करते हुए डॉ.आशीष जोशी, मुख्य संपादक तथा सी.ई.ओ.लोकसभा टी.वी., तमिलनाडु उच्च न्यायालय की न्यायाधीश बहन एस.विमला, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.राज बहन, ब्र.कु.गोदावरी बहन, ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा अन्य। **2.ओ.आर.सी.-** अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कोस्टारिका की राजदूत मरिएला क्रूज, सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् डॉ.वन्दना शिवा, अभिनेत्री बहन दिव्या खोसला, प्रोफेसर बहन कृष्णा मेनन, प्रो.बहन कल्याणी उन्कुले, चित्रकार मानव गुप्ता, ब्र.कु.आशा बहन तथा ब्र.कु.चक्रधारी बहन।

1.अजमेर- हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस मेले में बाबा बर्फानी की गुफा की महाआरती करते हुए राजस्थान के शिक्षा राज्यमंत्री भ्राता वासुदेव देवनानी। साथ में पूर्व विधायक भ्राता सोमरतन आर्य, डॉ.रजनीश सक्सेना, डॉ.रमेश क्षेत्रपाल, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य। **2.मण्डी-** आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के सिंचाई तथा जन स्वास्थ्य मंत्री भ्राता महेन्द्र सिंह ठाकुर, ब्र.कु.दीपा बहन तथा अन्य। **3.देहरादून-** 'स्वच्छ मन, स्वच्छ परिवेश, एक कदम स्वच्छता की ओर' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उत्तराखण्ड के कैबिनेट मंत्री भ्राता अरविंद पाण्डे, ब्र.कु.सुषमा बहन, ब्र.कु.चन्द्रकला बहन तथा ब्र.कु.मंजू बहन। **4.जम्मू-** महिला दिवस पर जम्मू-कश्मीर की शिक्षा राज्यमंत्री बहन प्रिया सेठी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुदर्शन बहन। **5.नागपुर-** अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए 'मिसिज यूनिवर्स लवली 2017' बहन शिल्पा अग्रवाल, सांसद भ्राता रघुनंदन शर्मा, आयोजक डॉ.रिया आर. जैन, ब्र.कु.रजनी बहन तथा अन्य। **6.मोहाली-** अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम में मंचासीन हैं पंजाब की महिला तथा बाल विकास मंत्री बहन रजिया सुल्ताना, ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन निदेशक बहन पूनम अमृत सिंह, ब्र.कु.प्रेमलता बहन तथा ब्र.कु.रमा बहन। **7.सोनीपत (माडल टाउन)-** अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा की महिला तथा बाल विकास मंत्री बहन कविता जैन, बहन कविता चौधरी, ब्र.कु.चक्रधारी बहन, ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.रामदेवी बहन तथा अन्य। **8. नालागढ़-** 'क्लीन नालागढ़, ग्रीन नालागढ़' अभियान कार्यक्रम के पश्चात् हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता आचार्य देवव्रत तथा हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनीता बहन। **9.दिल्ली (किंग्सवे कैम्प)-** 'स्वास्थ्य आपकी मुट्ठी में' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मनोचिकित्सक ब्र.कु.डॉ.गिरीश पटेल, विधायक भ्राता पंकज पुष्कर, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष भ्राता रामनिवास गोयल, ब्र.कु.साधना बहन, ब्र.कु.राजकुमारी बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से

पारदर्शिता

यों तो सभी गुणों का अपना-अपना महत्व है परन्तु इन सभी में मानसिक निर्मलता (Purity of thoughts) नामक जो सद्गुण है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसलिये कहा गया है कि ''सच्चे दिल पर साहेब (भगवान) राजी होते हैं।'' यह भी कहा गया है, ''मन साफ हो तो मुराद हासिल होती है।'' इस एक गुण में अन्य अनेकानेक गुण समाए हुए हैं। आज संसार में इस एक के न होने से ही अनेक दुर्गुण पनप रहे हैं। इस बात को थोड़ा स्पष्ट करना यहाँ प्रासंगिक होगा।

मानसिक निर्मलता का एक उच्च स्तर ऐसा होता है जिसे हम पारदर्शिता भी कहते हैं। पारदर्शिता हरेक को अपनी ओर आकर्षित तो करती ही है परन्तु साथ-साथ उससे अनेकानेक लाभ भी हैं। उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि किसी समाज में हरेक व्यक्ति का मन पारदर्शी है। उस समाज में हरेक व्यक्ति को यह स्पष्ट आभास होगा कि जिससे वह बात कर रहा है, वह क्या सोच रहा है अथवा उसकी वृत्ति क्या है। दूसरे व्यक्ति को भी यह आभास होगा कि हम दोनों क्या सोच रहे हैं, क्या कहना चाहते हैं, उसके पीछे हमारा भाव क्या है। यह स्पष्ट बोध होगा कि हमारा पारस्परिक वास्तविक स्नेह कितना है। मनुष्यों का स्नेह पशु-पक्षियों को पहुँचेगा और पशु-पक्षियों का मनुष्यों को पहुँचेगा, मानो कि भाषा के बिना ही आदान-प्रदान हो रहा है। भाषा तो एक अतिरिक्त माध्यम होगा। निर्मल मन वाले एक-दूसरे के निकट होते हैं और घनिष्ठता का अनुभव करते हैं।

इस गुण की अधिक गहराई में जाने पर आप इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि ऐसे समाज में बेईमानी, धोखेबाजी, मक्कारी, फरेब, झूठ, बनावटीपन, दिखावा, दम्भ, किसी को हानि पहुँचाने का संकल्प, बात छिपाने की कोशिश इत्यादि नहीं होंगे। जब हरेक व्यक्ति यह जानता, मानता और अनुभव करता होगा कि दूसरे भी उसके मन के बारे में स्पष्ट रीति से जानते हैं कि हमारे मन में क्या चल रहा है, तब वह उनसे छिपायेगा कैसे या उनसे धोखा कैसे कर सकेगा, झूठ कैसे बोल सकेगा? आज संसार में जो बेईमानी, रिश्वतखोरी, ईर्ष्या-द्वेष, हिंसा की भावना, वैर-विरोध, छीना-झपटी या स्वार्थ है, ये सब तो ऐसे समाज में होंगे ही नहीं क्योंकि हरेक का मन इतना साफ होगा कि वह दूसरे की मानसिक गतिविधियों को ऐसे ही स्पष्ट देख सकेगा जैसे पारदर्शी शीशे के पीछे की हरेक चीज स्पष्ट दिखाई देती है। वास्तव में हरेक को पारदर्शिता की स्थिति ही इस कारण प्राप्त होगी कि उनमें ये सब बुराइयाँ होंगी ही नहीं।

अमृत-सूची

- एकल मात-पिता (संपादकीय)......4
- पत्र संपादक के नाम 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 8
- शोक क्यों? 10
- आवश्यक सूचना 11
- बाबा ने बनाया अभूतपूर्व........12
- दुआओं का बल 13
- शक्ति का आधार 14
- कविता 16
- यज्ञ में अलौकिक नजराना... ..17
- पान, तम्बाकू छोड़ने का 19
- वाणी का महत्व 20
- बनें हम परमात्मा का 21
- सबसे अच्छा शिवबाबा 23
- पूर्ण हुई ईश्वरीय खोज 24
- जीवन-मूल्य 26
- सचित्र सेवा समाचार 28
- जीवन के आदि, मध्य और 30
- सचित्र समाचार............... 32
- रूहानी ज्ञान ने दिया जेल में......34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
: omshantipress@bkivv.org

सम्पादकीय ..

एकल मात-पिता

आज की दुनिया में बहुत-से ऐसे बच्चे हैं जो एकल मात-पिता (सिंगल पेरेन्टिंग) का दंश झेल रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि उन्हें माता-पिता दोनों का नहीं वरन् दोनों में से एक का, या तो माता का या पिता का ही प्यार-दुलार नसीब होता है। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसेकि दोनों में से एक की किसी दुर्घटना में या गम्भीर बीमारी में मौत हो जाये या विवाह विच्छेद होने के कारण दोनों में से कोई एक दूसरी शादी कर ले या अलग रहने लग जाये। आपसी विवाद के कारण, बिना तलाक भी दोनों में बहुत दूरी हो जाये या एक छोड़कर चला जाए आदि-आदि। भाग्यशाली बच्चे वो माने जाते हैं जिन्हें दोनों का प्यार-दुलार-पालना मिले।

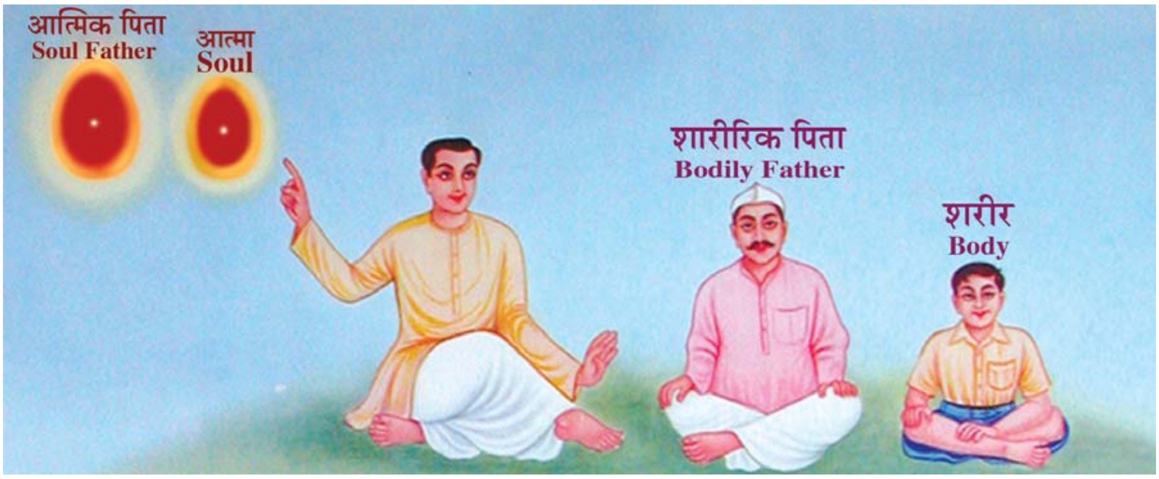

रूहानी मात-पिता से सम्बन्ध विच्छेद

अगर आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो सारी मानवता, इस समय एकल मात-पिता (सिंगल पेरेन्टिंग) का दंश झेल रही है। इसी कारण मनुष्यों का सन्तुलित विकास नहीं हो पा रहा है। किसी के व्यक्तित्व में कोई एक कमी रह जाती है तो दूसरे के व्यक्तित्व में कोई दूसरी। हर कोई तन-मन-धन और जन के आधे-अधूरे सुखों के साथ उम्र की पगडण्डी पर आगे बढ़ रहा है। इसका मूल कारण यह है कि संसार के लोग अपने एकल मात-पिता अर्थात् साँसारिक मात-पिता को ही अपना सबकुछ मान बैठे हैं और अपने पारलौकिक मात-पिता, रूहानी मात-पिता से उनका सम्बन्ध विच्छेद हो चुका है।

आत्महीनता का शिकार क्यों?

हम जानते हैं कि बच्चे के शरीर के निर्माण में माता-पिता की शक्तियाँ लगती हैं परन्तु उसकी आत्मा का पिता कौन? यह सही है कि माता-पिता के योगदान बिना शरीर का विकास नहीं हो सकता लेकिन क्या आत्मा के पिता के योगदान बिना, आत्मा के गुणों का विकास हो पा रहा है? आज मानव आत्महीनता का शिकार क्यों है? उसमें आत्मिक-गुणों की कंगाली क्यों है? उसका आत्म-विश्वास डगमगाता क्यों है? वह आत्मा के विषय में अनभिज्ञ क्यों है? इन सबका मूल कारण यही है कि आत्मा को करंट देने वाला, आत्म-विश्वास बढ़ाने वाला, आत्मा को जागृति देने वाला पिता उसे प्राप्त नहीं है।

शरीर और आत्मा के माता-पिता के कर्त्तव्यों में बँटवारा

जैसे लौकिक जीवन में माता और पिता के कर्त्तव्यों में बँटवारा होता है। माँ से बच्चे को घर के अन्दर की सुख-सुविधाएँ मिलती हैं और पिता घर के बाहर उसकी पढ़ाई, खेल-कूद, नौकरी आदि के लिए प्रयासरत रहता है। पिता घर से बाहर जाकर कमा कर लाता है और माता उस कमाए हुए धन को, घर में बैठकर बच्चों की पालना में लगाती है। इसी प्रकार, शरीर के मात-पिता और आत्मा के मात-पिता के कर्त्तव्यों में भी बँटवारा है। शरीर के मात-पिता लौकिक सुविधाएँ बच्चे को देते हैं परन्तु इस लोक से परे की या अपनी पहुँच से परे की उपलब्धियों के लिए तो वे भी उस पारलौकिक सत्ता का ही मुँह देखते हैं।

लौकिक पिता देता दवा, पारलौकिक पिता देता स्वास्थ्य

मान लीजिए, बच्चा बीमार पड़ गया। पिता अच्छे-से-अच्छी दवा, चिकित्सक, हॉस्पिटल का प्रबन्ध करेगा। फिर भी यदि स्वास्थ्य में सुधार नहीं दिख रहा है तो मुँह ऊपर करके कहेगा – हे परमपिता, मेरे पुत्र की रक्षा करना। पुत्र पूछता है – पिताजी, क्या आप मेरे रक्षक नहीं हैं? पिताजी कहते हैं – पुत्र, मेरे हाथ में दवा देने की शक्ति तो है परन्तु स्वास्थ्य उसके हाथों में है। निरोगी काया देने की शक्ति उसके पास है। तो देखिये, बच्चे को ज़रूरत तो पारलौकिक पिता की भी है अच्छे स्वास्थ्य के लिए परन्तु हमने उसे बता ही नहीं रखा उस पारलौकिक मात-पिता के बारे में। हम खुद भी तो उसे नहीं जानते इसलिए उसके होते हुए भी, उसकी नेमतों से वंचित हैं और शारीरिक कष्टों को, रोगों को, अक्षमताओं को झेल रहे हैं। सारी मानव जाति रोगों से पीड़ित है क्योंकि हम सब केवल लौकिक माता-पिता द्वारा पोषित हैं और पारलौकिक मात-पिता के कंचन काया के वरदान अर्थात् सदा स्वस्थ रहने के वरदान से वंचित हैं।

लौकिक पिता देता पुस्तकें, पारलौकिक देता स्मरण शक्ति

इसी प्रकार, बच्चे की शिक्षा के लिए लौकिक मात-पिता महँगी पुस्तकें, महँगा शिक्षा संस्थान, महँगे ट्यूशन आदि का प्रबन्ध कर लेते हैं परन्तु यदि बच्चे के मन में एकाग्रता का, स्मरण-शक्ति का, बौद्धिक क्षमता का अभाव है तो भी मात-पिता को वो सर्वोच्च पिता ही याद आता है और वे प्रार्थना करते हैं – प्रभु, हमारे पुत्र को सद्‌बुद्धि दो, ग्रहण करने की और पढ़ाई में सफलतापूर्वक आगे बढ़ने की शक्ति दो। है ना आश्चर्य की बात! बच्चे को ऐसे एकल मात-पिता प्राप्त हैं जो पढ़ाई के लिए साधन-सुविधाएँ तो जुटा सकते हैं परन्तु उसकी आत्मा की ग्रहण करने की, स्मरण करने की शक्ति बढ़ाने का कोई उपाय उनके पास नहीं है। लौकिक माता-पिता भी जानते हैं कि बच्चे के शैक्षिक सफर में यदि पारलौकिक का सहयोग मिल जाए तो सोने में सुहागा हो जाये।

पारलौकिक की देन – धन्धे में निर्द्वन्द्व स्थिति

पढ़-लिख कर जब बच्चा नौकरी या व्यापार में लगने का मन बनाता है तो भी केवल साँसारिक मात-पिता की मदद से काम नहीं चलता। अपने भाग्य को चमकाने के लिए, किस्मत के बन्द द्वार खोलने के लिए, धन्धे-नौकरी में उच्च स्तर पाने के लिए वह फिर उस पारलौकिक पिता की मदद की ओर ताकता है। कार्य कोई भी हो, उसमें निर्द्वन्द्व मन:स्थिति तथा सन्तुष्टता और प्रसन्नता उस पारलौकिक पिता की रहनुमाई से ही प्राप्त होती है। यदि कार्य में तनाव हो तो ऐसा कार्य, कमा कर खिलाने के बजाए हमें ही खाने वाला बन जाता है। आजकल छोटे-छोटे धंधों में भी बड़े-बड़े तनाव इसी बात की ओर इंगित कर रहे हैं कि लौकिक मात-पिता के प्रयास तो पूर्ण हैं परन्तु जिनसे अलौकिक मात-पिता का धन्धे में निश्चिन्तता का वरदान मिले वे प्रयास अपूर्ण हैं। इस अधूरी प्राप्ति की पूर्णता तब हो, जब हम पारलौकिक से विच्छेद हुए सम्बन्ध

को पुन: जोड़ें।

तन पोषित, मन कुपोषित

हर माता-पिता अपनी संतान को बीसों नाखूनों का ज़ोर लगा कर अच्छे-से-अच्छा देने की कोशिश करते हैं, बावजूद इसके, बच्चे ग़लत रास्ते पर चल पड़ते हैं, अपराध करने लगते हैं। उनका खान-पान बिगड़ जाता है। वे असामाजिक कृत्यों में लिप्त हो जाते हैं। माता-पिता को घर से निकाल देते हैं। उनका धन-सम्पत्ति हड़प लेते हैं। तब माता-पिता के मन में प्रश्न उठता है – हमने तो कोई कमी नहीं छोड़ी, फिर भी इनके कर्म ऐसे क्यों हैं? कारण यही है कि आपने केवल तन का पोषण किया परन्तु मन कुपोषित ही रह गया। आपने केवल तन को धोया पर मन पर मैल की परत-दर-परत चढ़ती ही चली गई। आपने पन्द्रह जेबों वाली जिन्स पहनाई परन्तु मन की फटी जेब से सर्वगुण और शक्तियाँ, बढ़ती उम्र के साथ निकल गईं।

भगवान ने कहा था – तन को तुम सवाँरना, मन को मैं सवाँरूगा इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में उनका महामंत्र है – 'मनमनाभव' अर्थात् मन मेरे में लगा दो। परन्तु इस अभागी मानव जाति से यही भूल हो गई कि इसने इस मन को मनमनाभव नहीं किया। यही कारण है कि उजले तन के भीतर काला मन भी है, जिसमें हिंसा, द्वेष, रीस, ईर्ष्या, प्रतिशोध, बराबरी, शोषण, अन्याय, अत्याचार, अनुशासनहीनता, अमर्यादा, असंयम, अनिद्रा, दु:स्वप्न, दुश्मनी, अहंकार, झूठ, पक्षपात, कर्त्तव्यहीनता, आलस्य, कामचोरी, रिश्वतखोरी आदि-आदि भरे हुए हैं।

सर्वांगीण विकास का युग पुन: लौट रहा है

वो संसार, जिसमें मानव जाति ने सम्पूर्ण सर्वांगीण सुखों को पाया था, केवल शास्त्रों और पुराणों की लिखत बनकर रह गया है, जिसे हम सतयुग, कृतयुग, आदियुग, स्वर्णयुग, देवयुग आदि नाम देते हैं। उस युग में श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण जैसे दिव्य मानव – तन की बीमारी, दुर्घटना, अकाले मृत्यु, तनाव, कटुता, मानसिक द्वन्द्व, प्राकृतिक विपदा आदि से पूर्ण मुक्त थे। उन्हें लौकिक के साथ पारलौकिक का वर्सा भी प्राप्त था। इस कारण वे अटल, अखण्ड, निर्विघ्न स्वराज्य के मालिक थे।

कहा जाता है, इतिहास अपने आपको फिर-फिर दोहराता है। जो बीत जाता है, वह पुन: लौटकर आता है। जैसे सूर्य अगली प्रात: पुन: उदय होता है उसी प्रकार, परमात्मा पिता द्वारा रचित सर्वांगीण और स्थाई विकास का वह युग पुन: लौटकर बस आने वाला ही है, उसी को वापिस लाने के लिए भगवान धरती पर पुन: अवतरित हुए हैं और सर्व मानव जाति को एकल के बजाए डबल पेरेन्टिंग का अनुभव करा रहे हैं। लौकिक मात-पिता के प्यार और वर्से के साथ-साथ, अपना पारलौकिक प्यार और वर्सा भी प्रदान कर रहे हैं।

आइये! हम डबल पेरेन्टिंग अर्थात् दोनों मात-पिताओं का सुख लूटें। लौकिक के साथ-साथ पारलौकिक से भी नाता जोड़ लें। उस पारलौकिक पिता का दिव्य नाम शिव है। उनका रूप ज्योतिर्बिन्दु है। उनका धाम – परमधाम है। वे सर्व गुणों के सागर हैं और हम मनुष्यात्माओं से उनके सर्व रिश्ते हैं यथा माता-पिता, बन्धु, सखा, स्वामी......। वे जन्म-मरण रहित हैं परन्तु एक साधारण वृद्ध मानव पिताश्री ब्रह्मा के तन में प्रवेश होकर सर्व सम्बन्धों का सुख मानव जाति को प्रदान करते हैं। जब वे धरती पर कर्त्तव्य अर्थ अवतरित होते हैं उस काल को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। वही युग अब चल रहा है। आज तक हमने जो पाया, उसमें और भी वरदानों को जोड़कर वे आत्मा को सम्पूर्णता प्रदान करने के लिए वचनवद्ध हैं। तो देर मत कीजिए, एक से नहीं, दोनों पिताओं से अधिकार प्राप्त कर, पदमापदम भाग्यशाली बन जाइये।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

अकेलापन तब अनुभव होता है जब हम यह भूल जाते हैं कि परमात्मा हमारे सबसे निकट और हमारे परम मित्र हैं

'पत्र' संपादक के नाम

जुलाई से दिसम्बर, 2017 तक के ज्ञानामृत के प्रत्येक अंक में सम्पादकीय लेख बहुत प्रेरणा देने वाले हैं। 'त्याग व सेवा की मूरत माता' लेख बहुत ही अच्छे तरीके से सजाया गया है। ज्ञानामृत के लेख अद्‌भुत प्रशंसनीय व सराहनीय हैं।

ब्र.कु.क्षमा रानी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

यूँ तो 'ज्ञानामृत' के प्रत्येक अंक में प्रकाशित लेख शिक्षाप्रद, मन को बहुत भाने वाले और आत्मोत्थान के लिए मार्ग प्रदर्शित करने वाले होते हैं परन्तु कभी-कभी विद्वान लेखकों द्वारा कुछ ऐसे गूढ़ विषयों पर अपने मन्तव्य प्रस्तुत किये जाते हैं जिनसे बुद्धिजीवी वर्ग को बहुत-सी जिज्ञासाओं और प्रश्नों का समाधान मिल जाता है। दिसम्बर, 2017 अंक में प्रकाशित 'धर्म और अध्यात्म' ऐसा ही लेख है। इसमें धर्म और अध्यात्म की बहुत तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से सुन्दर व्याख्या की गई है।

आज युवाओं में अधिकांश की, एक तो आध्यात्मिक बातों में वैसे ही रुचि कम है, दूसरा, अभी तथाकथित धार्मिक नेताओं के कारनामों ने उन्हें और ही अध्यात्म विमुख बना दिया है। अधिकतर लोग धर्म और अध्यात्म को एक ही समझ लेने की भूल भी करते हैं। प्रकाशित लेख 'धर्म और अध्यात्म' दोनों के बीच अन्तर को तो स्पष्ट करता ही है, साथ ही अध्यात्म की जीवन में उपयोगिता और महत्वपूर्ण आवश्यकता को भी दर्शाता है। ऐसे तार्किक और मर्मस्पर्शी लेख के लिए विद्वान लेखिका बहुत ही प्रशंसा और साधुवाद की सुपात्र हैं।

इसी अंक में 'ईर्ष्या की चोट न दें, न खायें' लेख में लेखक ने ईर्ष्या नामक मानवीय कमजोरी से होने वाली अतुलनीय हानि के प्रति पाठकवृन्द को सचेत किया है। साथ ही लेख में ईर्ष्या से बचने के उपायों की बड़ी बारीकी से व्याख्या करते हुए आत्मोन्नति की राह पर निकल चुके पथिकों को निराशा-हताशा से ऊपर उठकर ऊर्जावान बने रहने के लिए सकारात्मक सोच को विकसित करने का आग्रह किया है। ऐसे सरल विचारों के लिए जागरुक, बुद्धिमान लेखक को बहुत-बहुत धन्यवाद एवम् नमन।

ब्रह्माकुमार के.एल.छाबड़ा, रुड़की (उत्तराखण्ड)

फरवरी, 2018 अंक का संपादकीय 'हाथ नहीं, मन जोड़ें' के अनेक वाक्यांश और उदाहरण मर्म को छू गये – जैसे 1.'स्वच्छ जल के नल के नीचे रखते ही बाल्टी का पुराना गन्दा जल अपने आप निकल जाता है, उसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान धारण करने से व्यर्थ, विकारी विचार स्वत: समाप्त हो जाते हैं' 2.'दिशा के अभाव में पैर होते हुए भी हम भटक जाते हैं। विज्ञान पैर देता है पर दिशा देने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान चाहिए' 3.'प्यार का अर्थ है, मेरे घर का हर व्यक्ति चैन से रहे, सुकून से जीए और उसके सुख के लिए मैं अपना परिवर्तन कर लूँ' आदि। पृष्ठ 6 पर नीचे प्रकाशित सूक्ति किसी के लिए भी सम्पूर्ण जीवन का सन्देश और स्वमापक है– 'जरा सोचो, भगवान की नजर तुम पर है, तुम्हारी नजर कहाँ है!'

'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' स्तम्भ के अंतिम उत्तर की अंतिम तीन पंक्तियाँ हैं, 'बाबा से मदद मिलने का सीधा उपाय है, मन शांत, बुद्धि शुद्ध, संस्कार श्रेष्ठ तो सब इजी है। जब मन, वाणी, कर्म श्रेष्ठ हैं तो बाबा की बहुत मदद है क्योंकि बाबा देखता है।' प्यारी दादी ने इन्हें बहुत प्रभावशाली और हृदयस्पर्शी रूप में कहा है। शिवानी बहन का लेख 'कोई भी वस्तु खुशी नहीं देती', ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन का लेख 'मिठास के आवरण में जहर' जीवन के उद्देश्य और अपेक्षित कर्म को बहुत प्रखरता से प्रकट करने वाले हैं। ज्ञानामृत निस्संदेह जीवन अमृत की सार्थक पत्रिका है। मेरे लिए तो यह पूर्ण ताजगी का अपरिहार्य स्रोत भी है।

डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की, उत्तराखंड

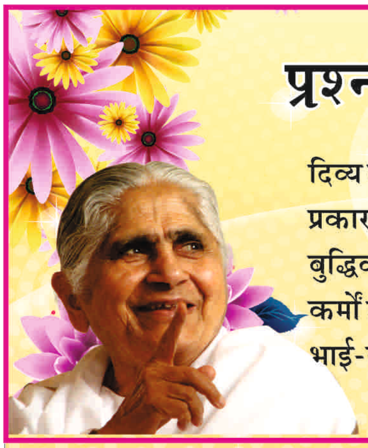

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- कौन-सी तीन शक्तियाँ हमेशा साथ-साथ चाहिएँ?

उत्तर- तीन शक्तियाँ तो हमेशा साथ-साथ चाहिएँ 1- सहनशक्ति, थोड़ी बात में नाराज़ कभी नहीं होना। राज़ी रहना, खुश रहना। 2- सदा सन्तुष्ट रहना, यह गुण बहुत अच्छा है। 3- पवित्रता का बल बहुत चाहिए। संगठन में रहते हुए भी, दुनिया में रहते हुए भी न्यारा, कमल फूल समान। गुलाब के फूल भी अच्छे हैं, गुलाब के फूलों में भी एक जैसे नहीं हैं। दो फूल भी एक जैसे नहीं होते पर कांटे जरूर होते हैं। तो उन कांटों को न देख फूल ले आते हैं।

कोई-कोई फूलों में कांटे नहीं होते हैं तो यह सारा फूलों का बगीचा है। यह खुशबू सारे विश्व में जा रही है। बैठे यहाँ हैं, बगीचा यहाँ है और खुशबू चारों तरफ जा रही है। सबको क्लास के लिये अच्छी कदर है। दुनिया वाले तो सिर्फ दु:ख में भगवान को याद करेंगे। हम ऐसे नहीं करते हैं, कभी कोई ऐसे कहते हैं क्या, ओ बाबा! नहीं। मेरा बाबा कहेंगे। हम जब याद करते हैं तो बाबा भी खुश होता है, उसकी याद में रहते हैं तो वो खुश होता है। काम नहीं, क्रोध नहीं... अभी भी किसी को गुस्सा आता है क्या? आता है गुस्सा? कभी भी नहीं। सब अच्छे हैं। सबके गुण देखने से मेरे में सब गुण आ जाते हैं। सब अच्छे हैं। इतना प्यार करेगा कौन! सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग – सारे चक्र में देखो, कोई इतना प्यार नहीं करेगा। अभी थोड़े समय के बाद हम सतयुग में राज्य करने के लिये जायेंगे, कितना वन्डरफुल ड्रामा है। हरेक का अपना पार्ट है। यह बहुत अच्छी बात है। सब कितने न्यारे-प्यारे और अच्छे हैं। तो देह में, सम्बन्ध में रहते हुए बाबा के हैं, बाबा हमारा है। कई ऐसे परिवार हैं जो पता ही नहीं चलता है, इनका कोई लौकिक सम्बन्ध है, सब अपना-अपना अच्छा पार्ट बजाते रहते हैं।

प्रश्न- हमारे अन्दर माइट (ईश्वरीय शक्ति) आती रहे, इसकी युक्ति क्या है?

उत्तर- बाबा हम सबको अपने साथ ले जाने के लिए आया है क्योंकि वह वहाँ का रहने वाला है ना। हमको भी वहाँ ले जाने के लिये आया है। फिर स्वर्ग की राजाई लेने में अभी साथ दे रहा है। हम एक बल, एक भरोसे से जैसे बाबा चला रहा है, वैसे चल रहे हैं। व्यक्तिगत हर आत्मा कहेगी, बाबा मेरा है और बाबा फिर सब बच्चों को ऐसी व्यक्तिगत फीलिंग देता है, मैं तेरा हूँ। बाबा, तू मेरा बाबा है। बाबा कहता है, मैं तेरा बाप हूँ। दिल से पूछो, बाबा अन्दर ही अन्दर गुप्त कितनी शक्ति दे रहा है। हम बदलेंगे, दुनिया बदल जायेगी, यह गैरंटी है और मुझे बड़ी खुशी है, यह सभी जो बाबा के बच्चे हैं ना, इतना अपने आपको लायक बना रहे हैं, जो आपको देख औरों को भी अच्छा पुरुषार्थ करने में उत्साह-उमंग आ जायेगा।

कोई कारण से भी भारीपन न हो। गुप्त प्रैक्टिस करो, जो भी समय मिलता है देखो, मैं हल्की हूँ! फिर, लाइट के साथ हम लाइट तो हो रहे हैं पर माइट भी आ रही है? अभी मैं बड़ी सहज युक्ति बताती हूँ, लाइट रहो तो माइट आपेही आती है। लाइट के दो अर्थ हैं, हल्का भी है, रोशनी भी है। दोनों एक ही टाइम में अनुभव हों। भारी होने की कोई जरूरत नहीं

है। कोई भी बात सोचने की जरूरत नहीं है। राइट क्या है, राँग क्या है, इतनी बुद्धि बाबा ने अच्छी दी है। जो राइट बात है वो ऑटोमेटिक मेरे से होगी, जो राइट नहीं है वो नहीं होगी। उसमें सेफ्टी है। बाबा मेरा है ना, फॉलो करना है सिर्फ। जैसे वो करता है, वैसे करना है। वो ऐसा अच्छा है, जो मैं चाहूँ, वैसे वो कराता जरूर है।

प्रश्न- मन के शान्त और बुद्धि के श्रेष्ठ होने के फायदे बताइये?

उत्तर- मन शान्त रहेगा तो बुद्धि श्रेष्ठ होगी। फिर अच्छा सोचेंगे क्योंकि जैसे मन-बुद्धि होंगे वैसे ही संस्कार बन जायेंगे। हर एक अपने को देखे कि हमारे संस्कार कैसे हैं। संस्कारों में कोई गड़बड़ न हो। संस्कार शुद्ध हों। दिल में सिर्फ दिलाराम हो, दिमाग में कोई भी फालतू बात न हो। फिर बाबा की दृष्टि महासुखकारी है। मैं हमेशा कहती हूँ, बाबा तू कितना अच्छा है, गोद बिठाके गले लगाया, गले लगाके पलकों में बिठाया, पलकों में बिठा करके सारे विश्व में घुमाया। बाबा मेरा कैसा है, वो बताने के लिये 4-5 मिनट शान्ति में बैठो तो लगेगा कि मैं कितना खुशनसीब हूँ, जो बाबा ने अपनी दृष्टि से सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द से भरपूर किया है। वन्डर है जो बाबा इतनी शक्ति देता है।

हमारा बाबा बहुत मीठा है, मैं भी मीठी हूँ। मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कह कहके बाबा हम सबको मीठा बना रहा है। हमारी भावना है, सब राज़ी-खुशी से रहें, राज़ी हैं तो खुश हैं। बाबा ने सब सहज कर दिया है। बाबा कहता है, बच्चे, कभी मेहनत नहीं करो। मोहब्बत है तो मेहनत नहीं है। ज्ञान के गुह्य राज़ों को समझने से खुशी होती है। बाबा है तो भाग्य है, दोनों मेरे साथी हैं।

प्रश्न- नरक का द्वार कहाँ है?

उत्तर- मर्यादा है कि कम बोलो, धीरे बोलो, मीठे बोल बोलो, जो कोई भी खुश हो जाये। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, लगाव, झुकाव, टकराव से बचकर रहना है। इन्हें यहाँ ही त्यागना है, छोड़ना है। इनमें से कोई भी विकार है तो समझो, यह नर्क का द्वार है। काम महाशत्रु है, परन्तु क्रोध थोड़ा भी नहीं हो। लोभ भी बड़ा विकार है, पैसा चाहिए, यह चाहिए...। फिर है मोह। यह व्यक्ति मेरा सम्बन्धी है, यह मेरा-मेरा न हो। अहंकार का तो अंश भी न हो। इन सब विकारों को अन्दर ही अन्दर खत्म करना है। संकल्प में दृढ़ता का अर्थ है, मन यहाँ-वहाँ बँटा हुआ न हो। प्रभु के प्यारे हैं तो सफलता है। एक-दो को देखते हैं तो कितने मीठे लगते हैं।

हमें तो बाबा ने इन पाँचों विकारों को जीतना सिखाया, इसके फलस्वरूप अभी हम निर्वाणधाम, शान्तिधाम जायेंगे फिर सतयुग में आयेंगे। एक बार बाबा पहाड़ी पर बैठकर सबको दृष्टि दे रहा था। फिर बाबा ने पूछा कि कहाँ बैठे थे? हम बाबा को देख रहे थे कि क्या उत्तर देवें। फिर बाबा ने ही बोला, ब्रह्माण्ड में बैठे थे। ब्रह्म तत्व में जहाँ अण्डे मिसल आत्मायें रहती है, वहाँ बैठे थे। बाबा ऐसे सिखाता है, बाबा ने ऐसे-ऐसे शब्द उच्चारण किये हैं।

प्रश्न- बाबा की शिक्षा है, यह भूल कभी नहीं करना, कौन-सी भूल?

उत्तर- कहा जाता है, पंछी और परदेशी दोनों नहीं किसी के मीत। वो फ्री हैं, सदैव उड़ते रहते हैं। हमें भी किसी भी कर्म में, कहीं पर भी, किसी के स्वभाव-संस्कार से कुछ फीलिंग नहीं है। स्वयं से स्वयं भी खुश। आप भी खुश हैं ना। मैं तो खुश हूँ, बोलो तो नाचकर दिखाऊं! खुशी में दिल नाच रहा है, क्योंकि खुशी में बहुत हल्के हो जाते हैं। कोई बोझ नहीं है। बाबा अच्छा है, परिवार भी अच्छा है जिससे सभी का चेहरा मुस्करा रहा है। इस मुस्कराने में रूहानी राहत है। मेरा जी चाहता है कि ये थोड़े-से शब्द आप भी मनन-चिंतन करके जीवन में ले आओ। एक बाबा है, एक के होने से पॉवर आ जाती है। उस एक को साथी बनाने से बहुत सारी बातें आपेही ठीक हो जाती हैं। बाबा, आप जो बताते हो वो बड़ा अच्छा लगता है। बाबा क्या बताता है, मीठे बच्चे, कड़ुवा शब्द, रफ बोलना, यह भूल है। ऐसी भूल कभी नहीं करना। ❖

शोक क्यों?

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

जीवन में हमें बहुत सारे उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं लेकिन 'परिवार में किसी सदस्य की या अपने किसी नजदीकी दोस्त की मृत्यु हो जाना' सबसे बड़ी परीक्षा की घड़ी होती है। यह वो परिस्थिति है, जिसको पार करने के लिए हमें बहुत ताकत की आवश्यकता होती है। लेकिन अगर हमारे पास सही जानकारी है, बुद्धि है और साथ-साथ क्षमता भी है तो हम इस परिस्थिति को भी पार कर सकते हैं।

राजयोग में जो सबसे आधारभूत बात बतायी जाती है वो यह है कि 'मैं कौन हूँ?' यह एक प्रारम्भिक अनुभूति है, जो हमारे उद्देश्य को बदल देती है कि ये शरीर है, इसका नाम है, इसका परिवार है, इसका पार्ट है, इसकी जिम्मेवारी है। इन सबके लिए हमने कहा 'मेरा', मेरा नाम ये है, मेरा काम ये है, मेरे रिश्ते ये हैं। शरीर के लिए भी हमने कहा, मेरी आँखें, मेरा कान, मेरा शरीर, आज मेरा शरीर बहुत दर्द हो रहा है आदि-आदि। तो ये सब कुछ 'मेरा-मेरा' कहने वाला 'मैं कौन हूँ', यह हमें मालूम ही नहीं था।

राजयोग से हमें समझ में आता है कि वो एक ऊर्जा है जिसको हम 'चैतन्यता' कहते हैं। उसके अंदर पार्ट भरा हुआ है, उसमें जीवन है। यह शरीर दो चीजों के मिश्रण से बना है। एक तो यह शरीर स्वयं है, जो 'ह्यूमस' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'मिट्टी' और दूसरी है आत्मा, जो कि एक ऊर्जा है। तो ये जो शरीर है 'ये मेरा है' और मैं कौन हूँ? वो शक्ति हूँ। जब हमें यह समझ में आ जाता है कि 'मैं एक ऊर्जा हूँ' तो मैं यह भी समझती हूँ कि ऊर्जा का न तो निर्माण किया जा सकता है और न ही इसे नष्ट किया जा सकता है, यह शाश्वत् है। इस चैतन्य शक्ति को आध्यात्मिक भाषा में 'आत्मा' या 'स्पिरिट' कहते हैं। जब मैं शाश्वत् हूँ तो मृत्यु किसकी होती है?

पूरा जीवन हम मृत्यु के भय में जीते हैं लेकिन जब यह समझ में आ जाता है कि मैं तो 'अविनाशी' हूँ तो मृत्यु का भय भी निकल जाता है। आज दिन तक हम सुनते आये 'आत्मा' अजर, अमर और अविनाशी है, जो अग्नि में जल नहीं सकती है, वह मर नहीं सकती है, जिसका विनाश नहीं हो सकता है। जब मैं अविनाशी हूँ तो प्रत्येक आत्मा भी अविनाशी है। अब हमें मृत्यु की अवधारणा को समझना है कि मृत्यु क्या है? मैं आत्मा हूँ, जो इस शरीर का आधार लेकर अपनी भूमिका निभाती हूँ तथा अन्य लोगों के साथ संबंध स्थापित करती हूँ। अब हम देखें कि वो आत्मा, जो कल तक मेरे साथ थी, उसका मेरे साथ एक कार्मिक खाता था। हम कहाँ से आते हैं, जन्म और मृत्यु का निर्णय कैसे होता है, कब तक उसे उस शरीर में रहना है और फिर कब वहाँ से वापिस चलना है, यह हमारे कार्मिक संबंध पर निर्भर करता है।

जिन आत्माओं के साथ हम आज हैं, हम पहले भी कभी उनके साथ थे। जब हम पहले उनके साथ थे तब हमारा एक विशिष्ट लेखा उनके साथ बना था। अब हम फिर से उनको मिलते हैं तो फिर हमारा एक लेखा बन जाता है। लेकिन जैसे ही मेरा ये लेखा चुक्ता हो जाता है, तब वह आत्मा उस शरीर को छोड़ देती है। इसके बाद वो आत्मा एक क्षण भी उस शरीर में रुक नहीं सकती है। अब हमें यह समझ में आ जाता है कि वो आत्मा एक निश्चित समय के लिए, अपना लेखा चुक्ता करने के लिए आयी थी। अब वो आत्मा वहाँ गयी है जहाँ उसका एक नया लेखा है। इस

तरह से 'आत्मा' अपनी यात्रा पर आगे बढ़ती रहती है।

जैसेकि एक रेलगाड़ी है जिसमें हम सफर कर रहे हैं। हम सब अपनी-अपनी यात्रा पर हैं। अब ऐसा नहीं होगा कि सब लोग एक ही स्टेशन से चढ़ें और सब लोग एक ही स्टेशन पर उतर जाएँ। हरेक की यात्रा अलग-अलग है तो हरेक का चढ़ने का और उतरने का स्थान और समय भी अलग-अलग है।

अगर आपका लेखा मेरे साथ चार दिन का है तो उसके बाद आपको दूसरी जगह जाना ही जाना है क्योंकि पाँचवें दिन आपका सम्बन्ध दूसरी जगह है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि आप सप्ताह में तीन दिन हमारे साथ रहते हैं लेकिन चौथे दिन आपको कहीं और जाना है। आपकी वचनबद्धता है। अब मुझे तीन दिन तक आपके साथ बहुत अच्छा लगा। मैं सोचूँ, चौथे दिन भी आप यहीं आ जायें। तो मेरे चाहने से आप यहाँ नहीं आ सकते हैं क्योंकि आपका हिसाब-किताब अब चौथे दिन कहीं और है। ❖

आवश्यक सूचना

(सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. नये वर्ष 2018-19 में 'ज्ञानामृत' तथा 'दी वर्ल्ड रिन्युवल' पत्रिकाओं का भारत में वार्षिक शुल्क 100 रुपये तथा विदेशों में वार्षिक शुल्क 1,000 रुपये ही रहेगा। आजीवन शुल्क भारत में 2,000 रुपये तथा विदेश में 10,000 रुपये रहेगा।

2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल 'ज्ञानामृत' या 'The World Renewal' के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर तथा ई-मेल ID जरूर लिखें।

3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच P.B.K.I.V.V.शान्तिवन में है।

4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल 'ज्ञानामृत, शान्तिवन' या 'The World Renewal, Shantivan' ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।

5. अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी ज्ञानामृत के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन

सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367

सेविंग बैंक एकाउंट का नाम: World Renewal Gyanamrit IFS Code: SBIN0010638

ऑनलाइन भुगतान करने के बाद नीचे लिखे ई-मेल पर अपना पूरा पता और बैंक भुगतान का पूरा विवरण भेजें। डिपोजिट केवल NEFT/ONLINE के द्वारा ही करें।

6. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंग्रेजी में ही लिखकर भेजें।

7. नकद राशि जमा करने की बजाय खाते में ही ट्रान्सफर करें। यज्ञ के बैंक एकाउंट से ट्रान्सफर नहीं करें।

संपर्क के लिए

ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।

फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116

मोबाइल : 09414006904, 09414423949

E-mail: omshantipress@gmail.com, hindigyanamrit@gmail.com

बाबा ने बनाया अभूतपूर्व

ब्रह्माकुमार सीताराम अग्रवाल, डिडवाना (राजस्थान)

आज के अधिकतर मनुष्यों में तनाव, अवसाद, उच्च रक्तचाप जैसे रोग कूट-कूट कर भरे हुए हैं। परमपिता परमेश्वर द्वारा प्रदत्त बेहद की प्राकृतिक सौगातों का आनन्द नहीं लेने से ही ऐसा हो रहा है। बर्फ व हरियाली से ढके हुए ऊँचे-ऊँचे पहाड़, बहते हुए झरनों का शोर, बहती नदियों का कोलाहल, हरे-भरे लहलहाते हुए पेड़, फूल-पत्तियों पर गिरी हुई ओस की बूँदें, उड़ते पंछियों की चहचहाहट, पशुओं का रम्भाना, फूलों की खुशबू, सर्दी से सिकुड़ते हुए प्राणी को सूरज की गर्मी, गर्मियों में चाँद की रोशनी की ठण्डक, बरसात की बौछारें, पर्यावरण से प्राप्त शुद्ध ऑक्सिजन – इन सभी प्रकृति के उपहारों का लुफ्त उठाते हुए अपने आपको प्रसन्नचित्त रखा जा सकता है परन्तु 'समय नहीं है' यह कहकर मानव इनसे वंचित रह जाता है।

भाग रहे हैं दमड़ी के पीछे

प्रकृति ने सबके लिए दिन-रात चौबीस घण्टे के बनाए हैं। स्वास्थ्य को सही रखने के लिए इन चौबीस घण्टों में से आधा घण्टा भी हमारे पास नहीं है क्योंकि हम दमड़ी के पीछे भाग रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ शरीर, जिसके नाक में ऑक्सिजन की नलकी लगी है, अन्तिम सांसें ले रहा है। हम इसके सिरहाने रुपयों की बोरियाँ भरकर रख दें तो उसे बचा सकते हैं क्या? सभी सुविधाओं से युक्त करोड़ों का मकान होते हुए भी, भूकम्प आने की सम्भावना हो तो इसके सभी रहवासियों को उसे छोड़कर भिखारियों की तरह दौड़ना पड़ता है।

पाप के घड़े की बूँदें

घर-घर में बुजुर्गों को प्रताड़ित करना, उनसे किसी बात की राय न लेना, उनके निर्णयों को चुनौती देना, उनके द्वारा असहायों की सहायता सहन न करना, अपनी हर गलती उन पर आरोपित करना – ये सब बातें पाप के घड़े में पड़ने वाली बूँदें हैं।

भ्रमण के लिए कई घण्टे का सफर करते हुए, रात होने पर ड्राइवर को डिनर के लिए पैसे देकर कह देते हैं, गाड़ी में सो जाना और खुद विलासिता युक्त होटल में ठहरते हैं। पाँच या छः घण्टों के बाद पुनः सफर चालू कर लेते हैं। ड्राइवर के द्वारा यदि हल्की दुर्घटना हो जाए तो उस पर चिल्लाने लगते हैं कि देखकर नहीं चलाता। गलती मालिक की अपनी है, ड्राइवर को रात्रि में विश्राम ढंग से नहीं मिला इसलिए उसे झपकी आ गई। दुकान में पड़ी हुई स्याही की दवात सेठ के पैर की ठोकर से यदि गिर जाए और स्याही बहने लगे तो मुनीम को कहेगा, बीच में रख दी और वही दवात जब मुनीम की ठोकर से गिर जाए तो बोलेगा, अंधा है, दिखता नहीं है क्या?

आत्मा की सफाई नहीं करते

तीर्थ स्थानों पर या नदियों में स्नान आदि करके, पूरे तन को रगड़-रगड़ कर साफ कर लेते हैं लेकिन जो आत्मा, शरीर के अन्दर सूई की नोक से भी हजार गुना छोटी है, उसकी सफाई नहीं करते। नदियों में स्नान तो किया पर नदियों से यह नहीं सीखा की बहते-बहते अन्त में समुद्र में जाकर विलय होना है। इस दौरान नदी की तरह रास्ते के खेत-खलिहान को हरा-भरा किया जाए तो यह सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

स्कूल में पहला घण्टा लगने पर इतनी खुशी नहीं होती जितना कि अन्तिम घण्टा लगने पर घर जाने की तैयारी में चेहरे खिलखिलाने लगते हैं। जिन्दगी रूपी स्कूल का अन्तिम घण्टा बजने से पहले हम भी खिलखिलाते हुए लौटना सीख लें।

ट्रस्टी बनने की शिक्षा

मैं कैसे शुक्रिया अदा करूँ शिव बाबा आपका, आपने मुझे अपना बच्चा बनाया। ज्ञान, योग, धारणा, सेवा जैसे

विषयों से अवगत करवाया तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए भूतपूर्व बनने की बजाय अभूतपूर्व बनने की शिक्षा दी। आप ही की शिक्षा ने मालिकपन से दूर रह कर ट्रस्टी बनने की शिक्षा दी। ऊँचाई से मुझे बहुत डर लगता था, बस से सफर करते हुए रास्ते में आने वाले ओवर ब्रिज व घाटियों से डर जाता था लेकिन माउण्ट आबू की सैर करने के बाद से उक्त भय समाप्त हो गया। बाद में मैंने उत्तराखण्ड की पहाड़ियों का सफर भी बिना किसी हिचकिचाहट के बेफिकर होकर किया।

मुझे फख़्र है कि मैं शिव बाबा का बच्चा हूँ। आज मेरे शिव बाबा ने मुझे ज्ञान देकर, घर-परिवार में कमल फूल समान न्यारा और प्यारा रहना सिखा दिया है। ❖

दुआओं का बल

ब्रह्माकुमारी जागृति, अंकलेश्वर (जी.आई.डी.सी.), गुजरात

मैं पिछले 17 सालों से अकेली ज्ञान में चल रही थी। मेरे युगल को ज्ञान में आये छह मास ही हुए हैं। हर रोज रात को भोजन करने के बाद वे इन्सुलिन लेते थे। पिछले कई दिनों से रात को इनकी शुगर का लेवल कम हो जाता था। जब मैं सुबह अमृतवेले योग करने उठती तो ये शक्कर खाने उठते थे। मैंने कहा, चलो डॉक्टर को दिखा आते हैं लेकिन वो डॉक्टर के पास जाने के लिए तैयार नहीं हुए।

अक्टूबर, 2017 में एक रात को उनकी शुगर कम हो गई थी। उनकी हालत ऐसी थी कि दोनों हाथ और पैर भी ऊपर-नीचे हो रहे थे। दांत बंद हो गये थे। पूरी छाती फूल गई थी। आँखें ऊपर चली गई थी। यह हालत देखकर मैं एकदम घबरा गई परन्तु बाबा ने मुझमें ऐसी शक्ति भरी कि मैं किचन से शक्कर लाकर फटाफट उनके मुख में डालने लगी लेकिन दाँत बंद होने के कारण शक्कर मुख के अंदर जा नहीं रही थी। फिर बाबा ने पानी याद दिलाया। फिर पानी-शक्कर साथ में डालने लगी लेकिन ज्यादा शक्कर तो मुँह के बाहर ही आ गई और चद्दर पर बिखर गई।

जब देखा कि होश में नहीं आये तो दरवाजा खोलकर, दो मकान छोड़कर डॉक्टर के घर उनको जगाने गई लेकिन डॉक्टर ने आवाज नहीं सुनी। फिर पड़ोसी को आवाज दी। उनका लड़का उठा, उनको सारी बात बताई और कहा, जल्दी डॉक्टर को लेकर आओ। फिर मैं घर वापस आ गई। फिर तो सभी पड़ोसी इकट्ठे हो गए। सबके आने के बाद वे तुरंत होश में आ गये और खड़े हो गये। शक्कर अंदर गई नहीं थी फिर भी इतनी जल्दी होश में आ गये। फिर उनकी याददाशत चली गई। किसको भी पहचान नहीं रहे थे और सबको धक्का लगाकर घर से बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे। उनको ऐसा लग रहा था कि इन सबने मुझे यहाँ बंद करके रखा है। फिर सबने मिलकर उनको पकड़ने की कोशिश की,ग्लुकोज का पानी पिलाया, इससे याददाश्त वापस आ गई।

इस परिस्थिति में मुझे महसूस हुआ कि बाबा को याद करने से बाबा की सर्व शक्तियाँ भी साथ में आ जाती हैं। उस समय बाबा की याद से मुझमें परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, परिस्थिति को सहन करने की शक्ति, सामना करने की शक्ति – चारों एक साथ आईं। इन सर्व शक्तियों ने मिलकर पहाड़ जैसी परिस्थिति को रूई समान बना दिया। यह देख एक पड़ोसी ने मुझे कहा कि आपने अच्छी हिम्मत रखी, हम होते तो इतनी हिम्मत नहीं रख पाते। मैंने कहा, यह मेरी हिम्मत और शक्ति नहीं है, यह तो मेरे बाबा की शक्ति और मदद है।

कहा गया है, एक भगवान ही है जो किसी भी समय, किसी भी स्थान पर पहुँच सकता है। मैं महसूस कर रही थी कि वो एक प्यारा बाबा ही है जो रात को, सिर्फ मुख से बाबा शब्द बोलने पर मदद के लिए पहुँच गया। युगल ने पिछले 17 सालों से, जब से मैंने ज्ञान लिया है, तब से पवित्रता का बहुत अच्छा सहयोग दिया है, अखंड पवित्र जीवन दिया है। कभी कोई अत्याचार मुझ पर नहीं किया। इस आत्मा को मेरी दिल की बहुत दुआएँ मिलती हैं। दुआओं ने ही इनको ऐसी परिस्थिति में भी बचाया है। ❖

शक्ति का आधार – अनासक्ति

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

हर मानव शक्तिशाली बनना चाहता है। शारीरिक शक्ति तो पशु के पास भी होती है परन्तु मानव की महानता उसकी आत्मिक अथवा आन्तरिक शक्ति में है। विकसित आत्म-बल वाला हर क्षेत्र में चमत्कारिक कार्य कर दिखाता है। औरों को असम्भव लगने वाला कार्य उसे चुटकियों का खेल लगता है। आन्तरिक शक्ति के बढ़ने का आधार है – अनासक्ति। अनासक्त होने का अर्थ है – वैरागी, राग-रहित, आकर्षण-मुक्त, न्यारा, मन से अछूता, संयमी, इन्द्रियजीत आदि-आदि। ऐसा व्यक्ति संसार में रहते, सर्व कर्त्तव्य पूर्ण करते भी अपने आन्तरिक बल का क्षरण नहीं होने देता। वह साक्षीद्रष्टा बन संसार की हर घटना को नाटक के भिन्न-भिन्न दृश्यों की तरह देखता है और उनका आनन्द लेता है। दूसरों को जो बात आनन्द में बाधा डालने वाली लगती है, वह उसमें भी आनन्द खोज लेता है। जैसे एक कुशल गृहिणी गर्म पतीले को पकड़ने के लिए बीच में कपड़ा रख लेती है और पतीले की गर्माहट से आहत नहीं होती, उसी प्रकार, साक्षीद्रष्टा व्यक्ति भी अपने और संसार के बीच में ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान को रखकर मर्माहत नहीं होता।

चीज बिगड़ी पर मन को ना बिगाड़ें

कई बार, कोई प्रिय वस्तु जब टूट जाती है, खराब हो जाती है या खो जाती है तो दुख बहुत होता है। ऐसा करने के निमित्त व्यक्ति पर गुस्सा भी बहुत आता है परन्तु हम विचार करें, हम सब आत्माओं की प्रिय से प्रिय वस्तु है अपना-अपना शरीर। यह निरन्तर हमारी निगरानी में है, हमारे साथ-साथ है, फिर भी यह नित्य परिवर्तन हो रहा है, दिन-प्रतिदिन बदरंग हो रहा है। इसके बाल काले से सफेद हो गए, किस पर गुस्सा करेंगे? दाँत हिलने लगे, घुटने जुड़ने लगे, कान कम सुनने लगे, कमर झुकने लगी और त्वचा ढीली पड़ने लगी, इन सबके बिगाड़ के लिए किस पर गुस्सा करेंगे? क्या प्रकृति पर? क्या समय पर? जो चीज बनी है वह बिगड़ेगी भी। बनने के साथ ही उसका बिगड़ना या टूटना या खोना या खराब होना निश्चित हो जाता है। चीजों का बदलना हम नहीं रोक सकते पर उनके कारण अपने मन को तो ना बिगाड़ें। चीजों को नहीं पकड़ सकते परन्तु अपने मन को तो पकड़ें। चीजें वश में न थी, न हो सकती हैं पर मन तो हमारी अपनी शक्ति है, उसे तो वश में रखें। अत: ध्यान रहे, नश्वर वस्तुओं के पीछे अनश्वर मन को कुर्बान न करें, उसकी शक्तियों को नष्ट न करें, उसे स्थिर और शान्त रखें।

चीज़ों में सुख नहीं है

किसी भी वस्तु में सुख नहीं है। दुनिया की जो भी चीज़ें निर्मित होती हैं, वे आवश्यकता पूर्ति कर सकती हैं परन्तु सुख अथवा शान्ति अथवा आनन्द नहीं दे सकती, क्योंकि वे जड़ हैं। जड़ चीज़ में सुख-शान्ति-आनन्द होता ही नहीं है। ये गुण तो चेतन आत्मा के हैं। हाँ, चीज़ को बनाते, बेचते, खरीदते यदि आत्मा के सुख-शान्ति-आनन्द के प्रकम्पन उसके चारों ओर फैलें तो वे प्रकम्पन उस वस्तु को सुखदाई बना सकते हैं। परन्तु हम जानते हैं कि किसी भी उत्पादन के चारों ओर लाभ-लाभ-लाभ के ही प्रकम्पन होते हैं। मान लीजिए, एक उद्योगपति एक फूलदान बनाने की फैक्टरी लगाता है तो सबसे पहले क्या सोचता है, मुझे लाभ कितना होगा? उस फैक्टरी में काम करने वाले कामगारों की बुद्धि में भी यही घूमता है कि काम के बदले धन कितना मिलेगा? फैक्टरी से माल खरीदने वाले थोक विक्रेता या खुदरा विक्रेता भी यही अन्दाज़ लगाते हैं कि कितने पीस बिके और एक पीस में कितनी बचत हुई! इस प्रकार धन-धन, लाभ-लाभ के प्रकम्पनों से भरी उस चीज़

को जब हम खरीद कर ले आते हैं तो देखने वाले यही पूछते हैं कि कितने में खरीदी?

चीज़ों को बड़ाई बटोरने का आधार न बनाएँ

यदि वस्तु महंगी है तो घर में कलह का कारण, झगड़े का कारण, ईर्ष्या का कारण बन सकती है। कोई यह भी कह देगा, तुम तो इस वस्तु के लायक ही नहीं हो, यह तो मेरे पास होनी चाहिए। कोई सोचेगा, यह इतने पैसे कहाँ से ले आए? कोई ईर्ष्या का मारा उससे भी बढ़िया ढूँढ़ने बाज़ार के चक्कर लगायेगा, आपको मात देने की कोशिश करेगा। कहने का भाव यह है कि वस्तु के उत्पादन से लेकर प्रयोग करने तक उसने कहीं भी सुख-शान्ति नहीं बिखेरी। इसलिए चीज़ों से ज़रूरत पूरी करें और न्यारे हो जाएँ। चीज़ों को बड़ाई बटोरने का आधार न बनाएँ। बड़ाई बटोरने के लिए आत्मा के मूल गुणों का प्रदर्शन करें जो कहीं से खरीदने नहीं पड़ते, आत्मा की मूल धरोहर के रूप में सभी के पास हैं ही हैं।

कर्मों की उलझी हुई कड़ी

हम जिन सम्बन्धों के बीच में रहते हैं उनमें से कई अत्यन्त दुखदाई हो सकते हैं। तब मन में सवाल उठता है, ऐसा क्यों है? दो परिवारों में कुछ दिनों के अन्तराल में जन्मे दो बच्चों के व्यवहार में जमीन-आसमान का अन्तर क्यों हो जाता है? हमारा बच्चा, हमारे चित्त में निरन्तर चिन्ता के बीज क्यों बोता रहता है? इसके पीछे अवश्य ही कर्मों की उलझी हुई कड़ी है। मान लीजिए, किसी पूर्व जन्म में, बच्चे की आत्मा किसी घर में बुजुर्ग का रोल प्ले कर रही थी और मैं उसी घर की बहू थी। इस बुजुर्ग की और मेरी संस्कारों की रास कभी नहीं मिलती थी। मैं जवान थी, समर्थ थी और वह बुजुर्ग था और असमर्थ था। मेरे व्यवहार की पीड़ा से पीड़ित होकर, मजबूरी-वश वह कुछ नकारात्मक प्रतिक्रया कर नहीं पाता था पर मन ही मन भगवान को या अपने आप को कहता था कि अब नहीं तो फिर किसी जन्म में मुझे इस पीड़ा का बदला लेना है। वह इसी चिन्तन में शरीर छोड़ता है। मेरे द्वारा पीड़ा की अनुभूति की स्मृति उसे अब इस जन्म में मेरा पुत्र बनाकर ले आयी है।

पाप-पून्जी का फल

मैं इस बात से अनभिज्ञ हूँ। जानता वह भी नहीं है परन्तु उसके अन्दर संस्कारों में बदले की भावना भरी हुई है। हम उसे प्यार, दुलार सब देते हैं परन्तु उसका हर कर्म दुखदाई है। हम अच्छा पहनाते हैं, अच्छा खिलाते हैं फिर भी वह पसीजता नहीं है, क्यों? क्योंकि वह इस भाव को लेकर जन्मा है कि मुझे पूर्व की उस पीड़ा का बदला लेना है। बदला लेने के लिए नजदीक सम्बन्ध में आना जरूरी है। सबसे समीप का सम्बन्ध पुत्र, पुत्री, पति या पत्नी का होता है। पुत्री से भी अधिक पुत्र का। हम उसे अपना सब कुछ विल कर देते हैं, वह हमारा कमाया खाता भी है और हमें रुलाता भी है। यह कर्मबन्धन है। कर्मों की पाप-पून्जी का फल है। अब समाधान यही है कि हम पुत्र-मोह, पुत्र-सुख की कामना छोड़ भगवान में मन लगाएँ ताकि वो पीड़ा के बोए बीज कट जाएँ। जैसे-जैसे योगबल से हिसाब चुक्ता होता जाएगा, पुत्र के माध्यम से सताने वाला कर्मबन्धन हल्का होता जाएगा और एक दिन समाप्त भी हो जाएगा। इसलिए सर्व प्रकार के कर्मबन्धनों को समाप्त करने की दवा है प्यारे पिता परमात्मा की प्यार भरी याद।

एक-दो का नहीं, सर्व का कल्याणकारी

कई आत्माएँ परमपिता परमात्मा से फरियाद करती हैं कि हमारे पति की या पुत्र की या पत्नी की बुद्धि ठीक कर दो। प्यारे बाबा ऐसे बच्चों के लिए कहते हैं, आपकी भावना बड़ी शुभ है, कल्याण की है परन्तु यह भावना हद की है और मैं बेहद का पिता हूँ। मैं बेहद की शुभकामना पूरी करने आया हूँ और उन्हें पूरा कर रहा हूँ। जैसे कोई चीनी का थोक व्यापारी है और प्रतिदिन चीनी की बोरियों से भरे ट्रक भारत के काने-कोने में भेजता है। कोई उस व्यापारी से कहे, सेठ जी, एक किलो चीनी दे दो तो सेठ जी कहेंगे, मैं चीनी की भरी हुई, बन्द बोरियाँ बेचता हूँ, मैं एक-एक

किलो बेच नहीं सकता। इसी प्रकार शिवबाबा भी कहते हैं, मैं एक-दो का नहीं, सर्व का कल्याणकारी हूँ। हाँ, यदि हम कहेंगे, बाबा, विश्व की सभी आत्माओं के पुत्रों, पत्नियों, पतियों की बुद्धि को ठीक कर दो तो इस बेहद की बात को वो सुनेंगे भी और करेंगे भी। इस प्रकार सर्व के कल्याण में हमारा भी कल्याण हो जाएगा।

अपनी रूहानी शक्ति बढ़ाओ

कई बार हम बाबा के आगे फरियाद करते हैं कि बाबा मेरी शक्ति कम है, मेरा प्रभाव मेरे परिवार वालों पर नहीं पड़ता, आप कुछ कर दो ताकि वो बदलें। यह संकल्प है तो शुद्ध परन्तु यह भी ऐसे है जैसे कोई कहे, मेरे हाथ स्वच्छ नहीं हैं, कोई मेरे घर को, कपड़ों को, बच्चों को साफ कर दे। विचार कीजिए, क्या कोई अन्य यह कार्य निभा पाएगा? हमें कहा जाएगा, आप ही अपने हाथ साफ कर लो और फिर अपना कार्य पूर्ण कर लो। बाबा भी कहते हैं, बच्चे, आप अपनी रूहानी शक्ति बढ़ाओ। मैं आपको याद की विधि से शक्ति देने को तैयार हूँ। जो मुझे पहचानते नहीं, जिनका मुझसे कनेक्शन नहीं, उन तक मेरा करेन्ट जाएगा कैसे? हम जानते हैं, हमें अपने बन्धन अपने ही श्रेष्ठ कर्मों से काटने हैं। यदि हम भगवान से केवल फरियाद करते हैं तो केवल फरियाद का फल कैसे निकल पाएगा?

तड़फ बोएँगे तो वही काटनी पड़ेगी

यादगार ग्रन्थ रामायण में दिखाया है कि जब राजा दशरथ से श्रीराम के लिए वनवास का वर मांगा गया तो वे बहुत तड़फे, रोए, गिड़गिड़ाए। उनका पुत्र श्रीराम (जिसे भगवान माना गया) अपने पिता को उस तड़फ और दुख से बचा नहीं पाया क्योंकि यह दुख राजा दशरथ के अपने कर्म का फल था। उसके शब्दभेदी तीर से श्रवणकुमार की मृत्यु होने पर, श्रवण कुमार के माता-पिता भी ऐसे ही तड़फे थे। तड़फ बोएँगे तो वही काटनी पड़ेगी। खुशी बोयेंगे तो वही काटने को मिलेगी। जो मिल रहा है, अवश्य ही वो हमारा ही बोया हुआ था। ❖

शिव ही गीता के दाता

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी.,
गुरुग्राम (हरियाणा)

गीताज्ञान का समय यही, भगवान स्वयं है आता।
सत्कर्मों का ज्ञान वही, हम सबको है बतलाता।।

धर्मग्लानि हिंसा की अति, व्यापकता पाँच विकारों की।
छल-कपट जहाँ पग-पग पर है, पीड़ायें अत्याचारों की।।

महाभारत का काल यही, समय आज है दर्शाता।
गीताज्ञान का समय यही, भगवान स्वयं है आता।।

विस्तार देह के धर्मों का, सत्य धर्म का मूल नहीं।
आडम्बर, दिखावे सब हैं, आदर्शों का तूल नहीं।।

मानवता का चीरहरण, प्रधान बनी है दानवता।
गीताज्ञान का समय यही, भगवान स्वयं है आता।।

ब्रह्मातन है रथ जिसका, सारथी वो शिव भगवान।
पवित्रता, सुख-शान्ति से, रचते जाते वो नया जहान।।

वेदों-शास्त्रों का सार, स्वयं आकर वो सिखलाता।
गीताज्ञान का समय यही, भगवान स्वयं है आता।।

कुरूक्षेत्र ये विश्व बना, युद्ध की बस तैयारी है।
परमपिता शिव की शिक्षाएँ, जग में सबसे न्यारी हैं।।

पहचानो, समय हाल अपना, स्वयं आज है बतलाता।
गीताज्ञान का समय यही, भगवान स्वयं है आता।।

शिव ज्योति-बिन्दु, निराकार, जन्म-मरण से है न्यारा।
एक वही सबका ईश्वर है, परम-सत्य सबसे प्यारा।।

ज्ञान की मुरली वही सुनाता, गीताज्ञान का है दाता।
गीताज्ञान का समय यही, भगवान स्वयं है आता।।

**जो दूसरों को जानता है वह बुद्धिमान है,
जो स्वयं को जानता है वह ज्ञानवान है**

यज्ञ में एक अलौकिक नज़राना

‘गुजरात ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर’

(ब्रह्माकुमार वीनू भाई, सुखशान्ति भवन, अहमदाबाद)

परम श्रद्धेय, वरदानीमूर्त सो साक्षात्कारमूर्त आदरणीया दादी जानकी जी के पावन कदमों की आहट और उनके वरदानी हस्तों से अहमदाबाद (गुजरात) में गुजरात ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर के विशाल प्रोजेक्ट की ‘फाउन्डेशन स्टोन सेरीमनी’ इस वर्ष के प्रारंभ में संपन्न हुई। इस समारोह में गुजरात जोन की निदेशिका आदरणीया सरदा दीदी, गुजरात की कई वरिष्ठ निमित्त बहनें और काफी संख्या में गुजरात के भाई-बहनें उपस्थित थे।

आदरणीया जानकी दादी जी के इस भूमि को वरदान :

यह तपस्या भूमि बनेगी।
यह परिवर्तन की भूमि बनेगी।
यह सेवा की भूमि बनेगी।
यह प्राप्ति की भूमि बनेगी।

अहमदाबाद से करीब 50 कि.मी.की दूरी पर उजेडिया गाँव की जमीन पर इस प्रोजेक्ट का निर्माण कार्य वर्तमान समय चल रहा है। करीब 40 एकड़ (65 बीघा) की विशाल जमीन पर गुजरात का एक अनूठा स्थान बनाने की भव्य योजना है।

गुजरात ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर का उद्देश्य –

1) इस ‘साइलेन्स भूमि’ पर दैवी आत्माएँ अंतिम कर्मातीत अवस्था तथा संपन्न स्थिति के लिए संगठन में तपस्या करेंगी।

2) गुजरात, आबू की पावन भूमि से अति समीप है। अंतिम अति विपरीत समय में यह रिट्रीट का स्थान एक ‘एशलम’ का स्थान बने, ऐसा विजन है। यहाँ बाबा के देश और विदेश के बच्चे आकर रहेंगे।

3) हमें नई सतयुगी दुनिया लानी है। इस स्थान पर रहने वाली सभी दैवी आत्मायें अपनी चाल-चलन और व्यवहार से सतयुगी दैवी गुणों को प्रत्यक्ष करेंगी। यहाँ का सम्पूर्ण संगठन सतयुग का जैसे एक मॉडल बनेगा।

4) इस आध्यात्मिक संकुल में निरंतर आध्यात्मिक सेवाओं की रिमझिम रहेगी। बेहद गुजरात इसका लाभ लेता रहेगा।

इस प्रोजेक्ट में निम्नलिखित निर्माण कार्य होगा –

1) आध्यात्मिक रिट्रीट संकुल –

विशाल भव्य हॉल, अनोखा म्यूजियम, मम्मा का मेडिटेशन हॉल, बाबा का कमरा, सेमीनार हॉल, दादी जी कॉटेज, साइलेन्स जोन, विशाल रसोई, भोजन-कक्ष, मेहमान और सेवाधारियों के आवास-निवास जैसे अनेक अति सुन्दर स्थान यहाँ निर्मित होंगे।

2) ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के निवास स्थान –

बाबा के पक्के, निश्चयबुद्धि, देश और विदेश के दैवी भाई-बहनें, जो संगमयुग में जीवन के अन्तिम समय को तपस्या के स्थान पर बिताना चाहते हैं, उनके लिए बहुत ही सुन्दर रहने के स्थान – वीला, बंगला और फ्लैट इस संकुल में निर्मित होंगे।

जी.जी.आर.सी. प्रोजेक्ट में सभी वरिष्ठों का शुभ आशीष

आदरणीया जानकी दादी जी, आदरणीया गुलजार दादी जी, आदरणीय निर्वैर भाई जी, आदरणीय स्व.रमेश भाई जी, आदरणीया जयंती बहन आदि यज्ञ के सभी वरिष्ठ आत्माओं ने इस प्रोजेक्ट प्रति अपने शुभ आशीष और वरदान प्रदान किए हैं।

जी.जी.आर.सी. प्रोजेक्ट का स्थान

सम्पूर्ण एकांत की ऊर्जा से सम्पन्न, लूनी नदी के तट पर यह विशाल स्थान शान्ति और आध्यात्मिकता के वायब्रेशन शुरू से दे रहा है। इस स्थान का लोकेशन अग्रलिखित अनुसार है –

'उजेडिया' विलेज, दहेगाम-मोडासा हाई वे पर, अहमदाबाद एस.पी.रिंग रोड पर दहेगाम जंक्शन से 32 कि.मी., हिम्मतनगर से 32 कि.मी., अहमदाबाद एयरपोर्ट से 46 कि.मी.और आबू रोड से 160 कि.मी.की दूरी पर है।

सादर निमंत्रण:- 'मधुबन' आने-जाने वाले समस्त भारत के और विदेश के दैवी भाई-बहनों को इस पावन भूमि पर अपने पवित्र कदम रखने, पधारने और इस भूमि को निहारने के लिए सादर सस्नेह आमंत्रण है। ❖

पृष्ठ 34 का शेष...

कभी बीमार नहीं पड़े। सभी कैदी भाई हमारे से बहुत अच्छा बर्ताव करते हैं और मान-सम्मान देते हैं। जेलर साहब भी पूरा सहयोग देते हैं।

'मुरलीवाले'

अगर बाबा का साथ नहीं होता तो हम डिप्रेशन में चले गये होते क्योंकि हमारे घर की स्थिति अच्छी नहीं है, पिताजी जेल में रहते वक्त ही गुजर गये। माँ बूढ़ी है जिसको ठीक तरह से दिखता भी नहीं है। हम पूर्वांचल के रहने वाले हैं, इतनी दूर से मुलाकात भी नहीं आती है, फिर भी हम खुश रहते हैं, योग लगाते हैं, स्वयं भी उत्साह में रहते हैं और दूसरों को भी रखते हैं, इसी कारण सभी हमें सहयोग देते हैं। यह बदलाव मुरली सुनने के बाद ही आया है, नहीं तो पहले हम क्रोधी थे और सारे बन्दियों से अलग रहते थे। अब एक परमात्मा, एक ईश्वरीय परिवार की भावना से रहते हैं। हम नियमित मुरली क्लास करने वाले भाइयों का अच्छा ही संगठन बन गया है जिससे सदा ही न्यारी-प्यारी जीवन अनुभव होती है। 'मुरलीवाले' के नाम से पूरे जेल में हम पुकारे जाते हैं। अधिकारीगण भी 'मुरलीवाले' के नाम से ही जानते हैं और हमारा सम्मान करते हैं, नहीं तो पहले बिलकुल तुच्छ समझते थे।

हम दोनों भाईयों को शिवबाबा में पूरा निश्चय है और अब हमें इसी धारणा में रहना है तथा अपने अन्य आत्मा भाईयों का कल्याण करना है। ❖

पान, तम्बाकू छोड़ने का फार्मूला

ब्रह्माकुमार बलीराम भाई, दोंडाइचा (महाराष्ट्र)

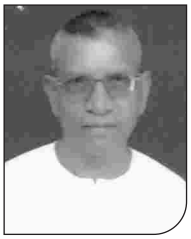

मेरा जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ। जब मेरी आयु 10 साल की थी तब ही पिताजी ने शरीर छोड़ दिया था। मैंने गाँव में ही बी.ए.तक पढ़ाई की। लौकिक बड़े भाई पान और सट्टे की दुकान चलाते थे। अचानक उन्हें बीमारी ने घेर लिया, इस कारण उनकी दुकान मैंने संभाल ली तथा पान और सट्टे के धंधे में लग गया।

विकारों में पूरी तरह डूब गया जीवन

मेरे मोहल्ले का एक भाई लैब असिस्टैन्ट के पद पर नौकरी करता था। हम दोनों की गहरी दोस्ती हो गई। उस को चोरी-छिपे शराब पीने की आदत थी। वह मुझे भी साथ ले जाता था। कुछ मास तक तो मैं उसके साथ बिना शराब पिये बैठा रहता था लेकिन जैसे कहते हैं कि बुरा संग जरूर असर करता है, मेरे साथ भी वही हुआ। मैं भी धीरे-धीरे शराब का आदी हो गया और जो-जो चीजें पहले नहीं खाता था, वे सब शराब के कारण खानी शुरू कर दी। दुकान पर बैठने के कारण जेब कभी खाली नहीं रहती थी। फिर धीरे-धीरे सट्टा, जुआ खेलना, भांग खाना – ऐसी बहुत-सी खराब आदतें लग गई। जीवन पूरी तरह विकारों में डूब गया। कभी महसूस भी नहीं होता था कि मैं गलत रास्ते पर चल रहा हूँ।

छूट गई देह देखने की खराब आदत

अचानक मेरे उसी दोस्त को अपनी ससुराल (जलगाँव) में ब्रह्मा कुमारीज़ का ईश्वरीय ज्ञान मिला। एक रात 9.00 बजे दुकान पर आकर वह कहने लगा कि 'आत्मा भृकुटी में रहती है। आत्मा का पिता परमात्मा है। यह सृष्टि-चक्र पाँच हजार वर्षों के बाद हूबहू रिपीट होता है' और मुझको सुबह सेवाकेन्द्र पर चलने का आमंत्रण दे दिया। दूसरे दिन हम दोनों साथ-साथ सेवाकेन्द्र पर गये। वहाँ का वातावरण मुझे बहुत अच्छा लगा। अगले दिन से साप्ताहिक कोर्स शुरू कर दिया। यह बात सन् 1992 की है। शुरू-शुरू में ज्ञान में इतना मजा नहीं आता था लेकिन ईश्वरीय सेवा में अच्छा मन लगता था। जब मुरली में दृष्टि, वृत्ति और पवित्रता की बात आती थी तो मैं सिर नीचे कर लेता था क्योंकि चमड़े (देह) को देखने की खराब आदत थी परंतु कमाल है शिवबाबा की और शिवबाबा की मुरली की। सचमुच मुरली में जादू है, जो रोज-रोज सुनते-सुनते देहभान से ऊँचा उठकर देही अभिमानी बन गया। अब देह के बजाए आत्मा को देखता हूँ और आत्मा भाई से बात करता हूँ। यह अभ्यास पक्का हो गया है।

बदल डाला व्यवसाय

एक बार शिवरात्रि कार्यक्रम के दौरान निमित्त बहन ने मुझे और एक दूसरे भाई को अपने साथ खड़ा कर, एक अन्य भाई को कहा, हमारी फोटो निकालो। मुझे बड़ी खुशी हुई कि बहन जी के साथ मेरी फोटो निकल गई। फिर बहन जी ने उस भाई को कहा, आज से तुम्हारा सिगरेट पीना बंद और मुझे कहा, तुम्हारा पान, तम्बाकू, गुटखा खाना बंद। मैंने तुरंत प्रश्न किया कि यह कैसे हो सकता है कि घी का डिब्बा अग्नि के पास रख दिया हो और वह पिघले नहीं। मैं तो पान, तम्बाकू बेचता हूँ और खाता भी हूँ। बहन जी ने पूछा, भगवान पर विश्वास है? मैंने कहा, हाँ है। उन्होंने कहा, जब भी पान, तम्बाकू खाने का दिल करे तब धनिया, सौंफ मुँह में डाल लेना। यह फार्मूला काम कर गया। पान की दुकान पर बैठ कर भी मेरा पान, गुटखा, तम्बाकू खाना बंद हो गया। बाद में व्यवसाय भी बदल डाला। अब कटलरी का व्यवसाय कर रहा हूँ। अब यह जीवन प्रभु की अमानत है। पिछले 13 साल से हर जुलाई मास में बाबा की

सेवा में शान्तिवन आता हूँ। बाबा की श्रीमत पर चलने से जीवन में सुख-शान्ति आ गई है। मेरे द्वारा बाबा नये भाई-बहनों के कोर्स कराना, मुरली क्लास कराना, यह सब सेवा कराता है। अब दिल से यही गीत निकालता है –

धन्य-धन्य हो गये, हम प्रभु को भा गये।
गा रही है जिंदगी, काम उनके आ गये।। ❖

वाणी का महत्व

ब्रह्माकुमारी राखी, जयपुर (सोडाला), राजस्थान

वाणी का प्रभाव जीवन में बहुत गहरा होता है। कड़वी वाणी होने पर हम कई लोगों व स्थानों से दूर हो जाते हैं, कइयों की बद्दुआयें ले लेते हैं और उनके मन को कई बार गहरी चोट भी पहुँचा देते हैं। हमें उस समय भले ही पता नहीं पड़ता परन्तु उनके साथ कर्म-बन्धन का खाता तैयार हो जाता है।

इसके विपरीत अगर हमारी वाणी मीठी होती है तो हम कई लोगों के दिल पर राज्य कर लेते हैं। इससे हमें विशेष सन्तुष्टता प्राप्त होती है। अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति से हम गद्‌गद् होने लगते हैं। सम्बन्ध-सम्पर्क व समाज में भी हमारा प्रभाव बढ़ता है।

लगभग दो हजार वर्ष पूर्व की बात है, यूनान के बादशाह महाराज ज्ञानेन्द्र रोम की यात्रा पर थे। अपने मित्र राजा दिवाकर के घर उनका संध्या का भोजन निश्चित हो चुका था। यूनानी महाराज ने अपने रोमन मित्र से यह अनुरोध किया था कि वे शाम को उनके भोजन में दुनिया की सबसे मीठी चीज परोसें।

संध्या का समय आया, राजा दिवाकर के महल में भोजन परोसा जा चुका था। महाराजा ज्ञानेन्द्र भोजन-कक्ष में पहुँच चुके थे। उनकी जिज्ञासा थी कि दुनिया की सबसे अधिक मीठी वस्तु क्या परोसी गई है! भोजन की आलिशान सजी हुई मेज के बीचोंबीच लाल मखमली कपड़े से ढकी हुई एक प्लेट थी। यह है वह वस्तु जिसकी तुमने फरमाइश की थी, राजा दिवाकर ने ढकी हुई प्लेट की तरफ इशारा करते हुए कहा। कपड़ा हटाए जाने पर प्लेट में रखी वस्तु को देखकर महाराज हतप्रभ रह गया। वह एक पशु की कटी हुई जुबान थी। रोमन राजा दिवाकर ने कहा, मित्र, जुबान की मिठास, हृदय और मस्तिष्क को छू जाती है तथा इससे अधिक मीठी चीज दुनिया में कुछ भी नहीं है। यूनानी बादशाह, राजा ज्ञानेन्द्र के इस कथन से पूर्णतया सहमत थे। भोजन के दौरान वे मानव की वाणी की महत्ता एवं उसकी अभूतपूर्व शक्ति के बारे में सोचते रहे।

भोजन समाप्त हुआ। जाते-जाते यूनानी बादशाह ज्ञानेन्द्र ने अपने रोमन मेजबान से एक विचित्र अनुरोध फिर किया। मित्र, मैं कल पुनः आ रहा हूँ, कल मुझे ऐसी वस्तु परोसना जो विश्व में सबसे अधिक कड़वी हो। अवश्य मित्र, रोमन मेजबान ने कहा।

अगली संध्या भी आ पहुँची। वही खुशनुमा शानदार माहौल, कतारबद्ध पकवानों से सजी मेज एवं इनके मध्य में वही एक प्लेट जो आज नीले मखमली कपड़े से ढकी हुई थी। उत्सुकतावश यूनानी सम्राट ने कपड़ा हटाया और आश्चर्यचकित रह गये फिर से एक जुबान को देखकर। यह क्या? मेहमान सम्राट ने पूछा। मेजबान मित्र का उत्तर था, हाँ मित्र, विश्व की सबसे कड़वी चीज भी यही है तथा विश्व की सबसे मीठी चीज भी यही है। इसका उपयोग अत्यन्त सावधानी से करना चाहिए।

दो राजाओं के उपरोक्त वार्तालाप से हम समझ गए हैं कि वाणी एक फूल है तो वाणी एक पत्थर भी है, वाणी से हम किसी को जोड़ भी सकते हैं तो वाणी से किसी को तोड़ भी सकते हैं। वाणी किसी को क्रोध भी दिला सकती है और किसी को शान्त भी कर सकती है। वाणी ही अग्नि बन सकती है और वाणी ही जल का काम भी कर सकती है। अतः इस शक्ति का सोच समझकर सावधानीपूर्वक प्रयोग करें। ❖

बनें हम परमात्मा का चैतन्य चित्र

ब्रह्माकुमारी गीता, शान्तिवन

संसार का इतिहास बताता है कि समय प्रति समय इस सृष्टि-रंगमंच पर अनेकानेक धर्मात्मायें, महात्मायें, समाज-सुधारक, वैज्ञानिक, साहित्यकार आते रहे हैं और समाज को उस समय के अनुरूप आवश्यक मूल्यों का ज्ञान और शिक्षा देते रहे हैं। संसार-चक्र में मध्ययुग – द्वापरयुग में जब हम मनुष्यात्मायें वाम मार्ग में जाते हैं और जीवन के नियम-संयम कमजोर होने लगते हैं तब दूर पश्चिम की ओर, प्रथम धर्म – इस्लाम धर्म के आदि पितामह अब्राहम जी तथा उसके बाद मोहम्मद पैगम्बर साहब ने आकर संसार को जीवन की श्रेष्ठ धारणाओं के नियम सिखाये और उन्हें कानून का रूप देकर सख्ती से पालन भी करवाया। इस प्रकार कर्म में धर्म के समन्वय का प्रयास किया गया। लेकिन समय बीतने के बाद आज हम देखते हैं कि उस मार्ग पर चलने वाले करोड़ों लोग होते हुए भी उनमें ही अराजकता, अशान्ति, लड़ाई-झगड़े और युद्ध होने लगे हैं। लोग लकीर के फकीर बन गये हैं लेकिन धर्म की धारणा से जो उदारता, विशालता, रहम और सहयोग की भावना आनी चाहिए वो नहीं है।

और आगे देखें तो यहूदी परिवार में पैदा हुए जिसस क्राइस्ट ने आकर प्रेम और भाई-चारे का पाठ सिखाया और उस समय के समाज में व्याप्त सितम-जुल्म से लोगों को मुक्त करने का प्रयास किया। आज विश्व में क्राइस्ट को मानने वालों की संख्या सबसे अधिक है लेकिन उनमें भी वैर-द्वेष, सत्ता की लालसा और धन की लोलुपता बढ़ती ही जा रही है।

पूर्व की ओर भारत में देखें। मध्ययुग में धर्म के नाम पर अंधश्रद्धा, हिंसा, पशुबलि-नरबलि बढ़ गई तब महावीर स्वामी ने आकर अहिंसा, जीवदया और जितेन्द्रियता के पाठ सिखाये लेकिन आज उनको मानने वाले लोगों में भी निरा स्वार्थ और अति परिग्रह वृत्ति आ गई है।

तथागत गौतम बुद्ध ने भी मैत्री, करुणा, अहिंसा के पाठ सिखाये और समाज को खाली पांडित्य, निरी विद्वता से निकाल मूल्यों की धारणा, इच्छाओं का निग्रह, सद्व्यवहार तथा जीने का अष्टांग सम्यक् मार्ग दर्शाया लेकिन सदियों के बाद, उसके पीछे चलने वाला वर्ग तथागत बुद्ध के सारभूत संदेश को भूल गया है। पुनः वे सभी लोग अलौकिक सिद्धियों तथा चमत्कारी विधियों में उलझ गये हैं।

धर्म, अध्यात्म, योग के नाम पर क्रियाकांडों में खोया हुआ एक विशाल वर्ग, धर्म की बातें-चर्चायें तो करता है लेकिन धार्मिकता-मानवता-सच्चरित्रता उनमें बिल्कुल दिख नहीं रही है।

अनासक्त कर्मयोगी जीवन पद्धति का ''गीताज्ञान'' नित्य अध्ययन करने वाला विशाल वर्ग आज तक भी जीवन को ''गीता'' नहीं बना पाया है। ''जीवन एक प्रभु वरदान है, सुंदरतम् उपहार है'' – ऐसा वर्णन करने वाले लोग और ही अपने जीवन को संकुचित, रसहीन और उदास बना बैठे हैं और बाह्याचार में अधिकतर समय, शक्ति, धन खर्च करते हुए नजर आते हैं।

सृष्टि-रंगमंच पर आकर अपने-अपने धर्म की स्थापना करने वाले महानुभावों को मानने वालों में यह दुराग्रह है कि हमारा धर्म-स्थापक ही श्रेष्ठ है, हमारा धर्म ही उच्च है, हमारे धर्मशास्त्र ही सत्य हैं, हमारे तीर्थस्थान ही पवित्र हैं। ये ही कारण हैं कि आज विश्व में इतने धार्मिक लोग हैं, हर धर्म के इतने अनुयायी हैं फिर भी संसार का वर्तमान बहुत ही धुंधला, घृणास्पद और डरावना है।

धर्म का अर्थ है धारण करना

संसार का सर्वश्रेष्ठ बुद्धिशाली प्राणी मानव कई प्रकार

 अच्छा या बुरा सब तुम्हारी रचना है और आधार है तुम्हारा संकल्प, इसमें भगवान का कोई हाथ नहीं

के तनाव, टकराव, अभाव व अवसाद से ग्रस्त हो गया है। वास्तव में जिनके आदेश में सच्चाई लगती है, जिनसे हम प्रभावित होते हैं, हम उनके केवल शब्दों को पकड़ कर रखते हैं। बस, इतना करने मात्र से धर्म नहीं हो जाता है। धर्म का अर्थ तो धारण करना है। धर्म कोई प्रचार, स्पर्धा या दिखावा करने का नाम नहीं है। धर्म तो स्वयं के व्यवहारिक जीवन से श्रेष्ठ परिणाम दिखाने की शुभ रीति है।

हममें वो दिखाई दे

हमें तो अपने अति प्रिय परम इष्ट परमात्मा को अपने जीवन द्वारा, मन-वचन-कर्म द्वारा, भाव-भावना व संवेदनाओं द्वारा अभिव्यक्त करना है। परमात्मा पिता के सर्वोच्च सद्ज्ञान को, सभी ईश्वरीय गुणों को, उनकी समस्त रूहानी शक्तियों को अपनी जिंदगी में समाविष्ट करना है। हमें तो उस अविनाशी, सर्वोच्च रचयिता की सुंदर अविनाशी रचना बनना है। हमें इतना पवित्र, शांत, सत्य, प्रेमरूप, आनंदमय बनना है जो हममें वो दिखाई दे। हम उनके प्रत्यक्ष प्रमाण बन जायें। परन्तु जीवन की सच्चाई आज ये है कि हम परमात्मा को मानते हैं परन्तु परमात्मा की नहीं मानते हैं।

जैसा पिता वैसा पुत्र

वास्तव में जिससे हमारा सच्चा प्यार होता है उनका तो हमें हर कदम अनुसरण करना होता है। परमात्मा हमारा पिता है तो जैसा पिता वैसा ही पुत्र होना चाहिए। जैसा रचयिता, वैसी उसकी रचना। रचयिता की कमियाँ या विशेषतायें रचना में भी आती हैं। माता-पिता के गुण, लक्षण, शारीरिक खामियाँ उनके बच्चों में भी आती हैं। इसी प्रकार, आध्यात्मिक दृष्टि से भी यही बात हम सोचें। अवश्य ही हम आत्मायें अपने अनादि स्वरूप में परमात्मा पिता जैसे ही गुणमूर्त होने चाहिएँ और हैं ही। अगर परमपिता परमात्मा के हम सपूत न बनें, परमशिक्षक के सुपात्र विद्यार्थी न बनें, परमसद्गुरु के सम्पूर्ण अनुगामी न बनें तो सिर्फ परमात्मा को याद करने का और उनके नाम पर कर्मकांड करके खुश हो जाने का क्या अर्थ रह जाता है? इसमें तो सिर्फ हमारी भावना संतुष्ट होती है कि मैं धार्मिक हूँ, बाकी उसका हमारे जीवन पर कोई स्थायी सकारात्मक प्रभाव नहीं रहता है।

परमात्मा पिता के प्रति हमारा सच्चा प्यार है, समर्पण है, सम्मान है तो हम मन-वचन-कर्म से उनका अनुसरण करें, अनुकरण करें। इतना ही नहीं, मन-वचन-कर्म से, तन-मन-धन से, संबंध-सम्पर्क और समय से विश्वकल्याण के दिव्यकार्य में साथी-सहयोगी भी बन जायें।

हमें देख प्रभुपिता की याद आए

हम परमात्मा पिता के जीते-जागते मिसाल बन जायें। उनका ज्ञान, उनकी याद, उनकी महिमा हमारे दिलोदिमाग में इतनी समायी हो जो हमें कोई देखे तो उसे प्रभुपिता की याद आ जाये। हमें देखें और लोग अंतर्मुख, आत्माभिमानी बन जायें। चंचल चित्त व्यक्ति हमें देखें और स्थिरमना, स्थितप्रज्ञ बन जायें। आओ, हम सभी कृत संकल्प बनें। ऐसा मनन-चिंतन, वर्णन, अध्ययन, अभ्यास, अध्यापन हम सभी करें। ऐसा पुरुषार्थ हर कोई कर सकता है। जहाँ हम रहते हैं, जिसके साथ रहते हैं, जिन परिस्थितियों में रहते हैं, उनमें रहते भी कर सकते हैं। इसमें कोई हठ-दमन, दिखावा-दंभ, ढोंग करने की तो आवश्यकता ही नहीं है। इसमें हमें किसी मनुष्य गुरु या व्यक्ति विशेष का आधार लेने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

हम हरेक जानते हैं कि परमपिता परमात्मा शांतिदाता है, सुखकर्त्ता है, शक्तिदाता है, प्यार का सागर है, सद्ज्ञान दाता है तो हमारी भी हर संभव दृढ़ कोशिश यही रहे कि हम उनके जैसे गुणवान बनते जायें। तब हम परमात्मा के सजीव शिल्प बनते जायेंगे।

भाल से फैले पवित्रता का प्रकाश

विश्व की सर्वोच्च सत्ता परमसत्य परमात्मा की प्रतिकृति बनने का दृढ़ लक्ष्य व अथक पुरुषार्थ करने वाले हम सबके भाल प्रदेश से पवित्रता का प्रकाश फैलता रहे।

मुख से सदा रूहानी स्नेह के सुमनों की वर्षा होती रहे। नयनों से आत्माभिमानिता की तपस्या का तेज प्रस्फुटित होता रहे। होठों पर आंतरिक प्रसन्नता की प्रतीक रूप मुस्कराहट की चमक हो। हम हरेक के दिल-दिमाग में अर्थात् हमारे विवेक व भावना में परमपिता परमात्मा की स्मृति और स्वरूप की झलक झिलमिलाती रहे। हम हरेक के हाथों में अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना, सद्गुणों रूपी हीरे-मोती से भरे थाल, सत्कर्मों की संपत्ति के शृंगार, अविरत-अबाधित रूप से प्रवाहित होते रहें। हम हरेक के कदम-कदम में पदमों की प्राप्ति के निशान चिह्नित होते दिखाई देने लगें। इन्हीं शुभ भावों के वास्तविक स्वरूप बनने से हम प्रभुपिता के चैतन्य चित्र अनुभव होंगे। ❖

सबसे अच्छा शिवबाबा का रास्ता

ब्रह्माकुमारी अनिता चौरसिया, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

फरवरी, 2017 से पहले मैं रोगग्रस्त, दुखी आत्मा अपनी जान गँवाने का उपाय ढूँढ़ रही थी। रो-रोकर कह रही थी कि हे प्रभु, मुझे इस जीवन से मुक्ति दिलाओ, कोई राह दिखाओ। खाना-पीना सब छूट-सा गया था। किसी से बात भी नहीं करती थी। किसी से अच्छा व्यवहार भी नहीं कर पाती थी। लगता था, सब मेरे दुश्मन हैं, इसलिए मन करता था, एकांत में ही बैठी रहूँ। मानसिक रोग विशेषज्ञ ने कह दिया था कि इनका इलाज अब नहीं कर सकते। ज्यादा दवाइयाँ देने से कोमा में जा सकती हैं। इन्हें चार वर्षों से दवाइयाँ दे रहे हैं, अब इन्हें इनके हाल पर छोड़ दो। इनकी रक्षा करने वाला अब सिर्फ भगवान है या फिर ये खुद ही खुद का साथ दें तो ठीक हो सकती हैं वरना नहीं।

एक दिन तनाव में ही, बिना किसी को बताए घूमने निकली। रास्ते में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला दिखाई दी। मैंने सोचा, यहाँ थोड़ी देर बैठ जाऊँ। मन तो नहीं था परन्तु थक गई थी इसलिए वहाँ की निमित्त बहन के पास बैठ गई। पहले दिन तो मैंने उस बहन को डाँट दिया कि मुझे कुछ सुनाओ मत परन्तु बाद में उसने समझाकर कहा, बहन जी, सिर्फ सात दिन आप यहाँ आने का सहयोग दें। उसके इस निवेदन को सुन मैंने सोचा, ये बहन भी तो मेरे जैसी है, अन्तिम बार इसका कहना मानूँ, फिर तो मुझे जो करना है, वह करूँगी।

बाबा का दिया हुआ आत्मा-परमात्मा का ज्ञान सात दिन सुनकर समझ में आया कि सबसे अच्छा यही रास्ता है। मन में दृढ़ता आई कि मुझे अब पुरुषार्थ करने के लिए जीना है। अब मैं अपने पति, बच्चों के साथ बहुत खुश रह रही हूँ। मुरली के कहे अनुसार पुरुषार्थ करती हूँ, इसके सिवा मेरा कोई काम नहीं। उसी गृहस्थ जीवन में आनंद आ रहा है। सोचती हूँ कि अन्तिम श्वासों तक पुरुषार्थ करूँ, इसके लिए मेरी आयु भी लम्बी हो जाए। मैंने 56 वर्ष व्यर्थ गँवाये। जीने का असली मजा अब आया है, जबसे बाबा का ज्ञान मिला है। अब सभी लोग मेरी तारीफ करते हैं। स्वस्थ भी रहने लगी हूँ। बी.पी.की गोली 8 महीने से बंद है। शुगर नॉरमल है, सिर्फ आधी गोली खाती हूँ। जब चेक करवाया तो पाया कि स्वस्थ हूँ। चश्मा लगाए बिना यह अनुभव लिख रही हूँ। पहले से अच्छा दिखने लगा है। पहले पुस्तक पढ़ती थी तो कुछ समझ में नहीं आता था। तनाव के कारण दिखाई भी बहुत कम देता था।

मेरे पति मुझे मधुबन लेकर आए हैं। मेरा पूरा साथ दे रहे हैं। अब के सुख का वर्णन नहीं कर सकती हूँ, जो बाबा ने दिया है। भक्ति मार्ग के सत्संग में भी जाती थी। वहाँ कहती थी कि मुक्ति का मार्ग मिले। अब जाना कि जीवनमुक्ति क्या है। किसी ने कहा था, आपके भाग्य में राजयोग है। अब समझी कि ब्रह्माकुमारीज का सुन्दर राजयोग मेरे भाग्य में है। मुझे राजयोग में बहुत ही आनंद आ रहा है। प्रतिदिन अमृतवेले शिवबाबा से मिलन होता है। मीठी-मीठी बातें होती हैं। वे रोज सुबह मुझे उठाते हैं, बहुत ही प्यार करते हैं।❖

अगर लोग आपकी अच्छाई को आपकी कमजोरी समझने लगते हैं तो यह उनकी समस्या है, आपकी नहीं।

पूर्ण हुई ईश्वरीय खोज

ब्रह्माकुमार चुनेश, शान्तिवन (आबू रोड)

मेरा जन्म सन् 1984 में धमतरी (छत्तीसगढ़) में एक साधारण परिवार में हुआ। लौकिक माता-पिता की ईश्वर के प्रति गहरी आस्था है जिसका प्रभाव मेरे जीवन पर भी पड़ा। मैं बाल्यकाल में काफी शर्मिला और एकांतप्रिय रहा। जब मेरी आयु 12 से 15 वर्ष के बीच थी तब मैंने लगातार 5-6 वर्षों तक प्रत्येक सोमवार को परमपिता परमात्मा शिव का व्रत रखा, साथ ही प्रत्येक मंगलवार को कुछ वर्षों तक हनुमान जी का व्रत भी रखा। श्रीकृष्ण, श्रीगणेश और माँ संतोषी का भी विशेष भक्त रहा। कभी-कभी मैं 'ओम नम: शिवाय' महामंत्र का भी कई घण्टों तक जाप करता रहता था। सत्संग, कीर्तन और कई धार्मिक कार्यों में भी काफी महत्वपूर्ण सहयोग करता था। लेकिन इतनी भक्ति करने के बावजूद भी मैं आंतरिक रूप से तनावग्रस्त, दु:खी और अशांत था। मुझे सत्य की खोज थी और मेरी यह खोज दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी।

खोज समाप्त नहीं हुई

मैंने गीता, रामायण, बाइबिल आदि कई धार्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया लेकिन ईश्वर की खोज समाप्त नहीं हुई। कभी मन में आता था कि जंगल में जाकर कठिन तपस्या करूँ और ईश्वर को प्राप्त करूँ जिससे मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो। मेरी इस प्रकार की भक्ति-भावना को देखकर कोई मुझे ऋषि, कोई नारद, कोई साधु, तो कोई सत्यवादी कहता था।

करता था सभी का सम्मान

विद्यार्थी जीवन में मैं सभी टीचर्स का अति प्रिय रहा। मेरे सभी दोस्त भी मुझसे बहुत ही प्यार और सम्मान से बातें करते थे। इसका एक मुख्य कारण यह था कि मैं भी सभी को बहुत आदर और सम्मान देता था। कभी किसी की बुराई या व्यर्थ बातें नहीं करता था। जब मैं बी.एससी. प्रथम वर्ष में था, तभी कम्प्यूटर सीखना शुरू किया। कम्प्यूटर कोर्स करने के पश्चात् एक सांध्य दैनिक अखबार 'एम.पी. डीलक्स टाइम्स' में मैंने कम्प्यूटर ऑपरेटर के रूप में 5 वर्षों तक नौकरी भी की।

आध्यात्मिक संग्रहालय का अवलोकन

सन् 2004 की बात है, एक दिन जब मैं ऑफिस जा रहा था, तो रास्ते में ब्रह्माकुमारी संस्था का एक बोर्ड देखा जिस पर लिखा था, 350 आध्यात्मिक मूर्तियों का संग्रह। मन में संकल्प उठा कि मुझे इन 350 आध्यात्मिक मूर्तियों को देखना है। अगले दिन महाशिवरात्रि का पर्व था। उस दिन पता पूछते हुए मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम जा पहुँचा। यह मेरे जीवन का सबसे महान और ऐतिहासिक दिन था। ब्रह्माकुमारी बहनों से मेरी मुलाकात हुई। एक भाई ने मुझे 350 आध्यात्मिक मूर्तियों का अवलोकन कराया। उन्होंने पहले मुझे यह परिचय दिया कि आप आत्मा हैं। आत्मा दोनों नेत्रों के बीच भृकुटि में स्थित है। आत्मा के अंदर तीन सूक्ष्म शक्तियां हैं – मन, बुद्धि और संस्कार। फिर उन्होंने बताया कि मन, आत्मा की संकल्प शक्ति है; बुद्धि, निर्णय शक्ति है और जैसे कर्म होते हैं वैसे ही संस्कार बन जाते हैं। जिस प्रकार ड्राइवर मोटर का नियंत्रण करता है, उसी प्रकार आत्मा इस शरीर का नियंत्रण करती है।

रहस्यपूर्ण बातें

इसके बाद परमात्मा का सत्य परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि परमात्मा का स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है, उनका नाम शिव है। शिव अर्थात् कल्याणकारी। उनका यादगार विभिन्न धर्मों में अलग-अलग नामों से विख्यात है। वे

प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि की स्थापना, शंकर द्वारा पुरानी पतित दुनिया का विनाश और विष्णु द्वारा नई दुनिया की पालना कराते हैं। परमात्मा और आत्माओं का निवास स्थान परमधाम है। उसी धाम से सभी आत्माएं यहाँ आकर अपना-अपना पार्ट बजा रही हैं। इस प्रकार उन्होंने ज्ञान की कई रहस्यपूर्ण बातें बताईं, जो मैंने कभी नहीं सुनी थी और जिनका वर्णन शास्त्रों में भी नहीं है।

उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान समय कलियुग के अंत और सतयुग के प्रारम्भ का संगमयुग है। इसी युग में परमात्मा इस धरा पर आकर सभी आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति प्रदान करते हैं। वर्तमान समय, परमात्मा अपना दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। अब यह दुनिया बदल कर नई सतयुगी दुनिया बनने वाली है जिसमें जाने के लिए आपका हार्दिक स्वागत है।

तनाव, चिन्ता, भय से मुक्ति

जब मैंने ये बातें सुनी, तो मैं काफी भावुक और गद्‌गद् हो गया। और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की मेरी उत्सुकता अधिक तीव्र हो गई। इसके लिए मैं प्रतिदिन ब्रह्माकुमारी संस्था में जाकर ईश्वरीय ज्ञान-रत्नों को सुनने लगा जो स्वयं परमात्मा शिव द्वारा, प्रजापिता ब्रह्मा के मुखकमल से उच्चारित किए जाते हैं। साथ ही राजयोग का अभ्यास करने से मेरे अंदर एकाग्रता, आत्मविश्वास, अनुशासन और कई दिव्य गुण आने लगे। मैं प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर परमात्मा का ध्यान करने लगा जिससे तनाव, चिंता और भय से मुक्त हो गया। मेरी कार्यक्षमता और चिंतन-शैली में काफी सकारात्मक परिवर्तन आया। इस प्रकार मेरी ईश्वरीय खोज पूर्ण हो गई।

अमृतवेले हुए दिव्य अनुभव

ईश्वरीय ज्ञान में आने के प्रारम्भिक दिनों में मैं प्रति रात्रि को सोने से पहले अपना पूरा चार्ट बाबा को बताता था और योग करके सोता था। मैंने लगभग 15 दिनों तक अनोखा अनुभव किया। अमृतवेले प्यारे बापदादा मुझे उठाने आते, कभी मुझे मेरे नाम से बुलाकर उठाते, कभी दरवाजे को बजाते, कभी कम्बल खींचते, तो कभी स्वप्न में दिखाई देते। इस प्रकार के अनुभवों से मैं उठ जाता और अमृतवेले योगाभ्यास करता।

अज्ञानजनित सोच हुई समाप्त

ईश्वरीय ज्ञान में आने से पूर्व कभी-कभी मैं सोचता था कि एक दिन अवश्य ही परमात्मा से मिलूँगा और मेरी भक्ति पूरी होगी। कभी-कभी अज्ञानजनित यह संकल्प भी चलता था कि ईश्वर मुझे किसी भी रूप में मिल सकते हैं इसलिए दान-पुण्य भी बहुत करता था। कोई भीख मांगने आते थे तो मैं उन्हें यह सोचकर पैसे भी दे देता था कि हो सकता है यही परमात्मा का रूप हो। लेकिन अब इस अज्ञानजनित सोच का समापन हो गया है। अब मुझे सही समझ मिली है कि परमात्मा पिता तो ऊँचे से ऊँचे हैं और दाता हैं, वे कभी भिखारी नहीं हो सकते। वे भिखारियों से भी भीख माँगना छुड़ाकर उन्हें भरपूर करने वाले हैं।

मिला है भक्ति का फल

वर्तमान समय मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय में समर्पित होकर सेवारत हूँ। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि स्वयं परमात्मा ने मुझे मेरी भक्ति का फल दिया है। मेरा यह जीवन ईश्वरीय कार्य में सफल हो रहा है। अब केवल एक ही इच्छा है कि अब हर संकल्प और श्वास परमात्मा शिव के कार्यों को सम्पन्न करने में सफल हो और मैं बाबा के गले का हार बन जाऊँ। ❖

बाजार में कई चीजें दिखने में आती हैं पर हम सभी तो नहीं खरीदते क्योंकि हमें अपना पैसा बर्बाद नहीं करना है। इसी तरह जिन्दगी में कई बुरी बातें देखने व सुनने में आती हैं पर सबको अपने मन में स्थान नहीं देना क्योंकि हमें अपनी मानसिक शक्ति बर्बाद नहीं करनी है

जीवन-मूल्य

अमिता हळदणकर, मुंबई (विक्रोली)

साधारण बोलचाल की भाषा में जैसे ही 'मूल्य' शब्द का उच्चारण किया जाता है, हमारा ध्यान 'दाम या कीमत' पर ही जाता है। हाँ, जीवन-मूल्य भी मानवीय जीवन को कीमती बनाने की क्षमता रखते हैं। मूल्य शाश्वत व्यवहार हैं। मूल्यों का निर्माण मानव के साथ-साथ हुआ है। यदि इनका अन्त होगा तो सभ्यता के साथ-साथ मानवता भी समाप्त हो जायेगी। जब कोई व्यक्ति जीवन-मूल्यों की सत्ता को खो देता है, तो भौतिक प्रगति के शिखर पर पहुँचकर भी दयनीय हो जाता है।

मूल्य शब्द की परिधि बहुत विशाल है, उसमें सत्यम्, शिवम् व सुंदरम् का भाव व्याप्त है। मूल्य शब्द वस्तुत: नीतिशास्त्र का पर्यायवाची है। नीतिशास्त्र में मानव के समस्त आचार-विचार संबंधी शिवत्व को ही मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। साहित्य में मूल्य शब्द अंग्रेजी के Value शब्द का समानार्थी है। यह शब्द लैटिन भाषा के Valere से बना है, जिसका अर्थ होता है अच्छा और सुंदर।

'मूल्य' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के शब्द 'मूल' से हुई है। 'मूल' का अर्थ है जड़, कंद, उत्पत्ति स्थान या आरंभ आदि। इसी 'मूल' शब्द का बदला हुआ शब्द 'मूल्य' है। मूल्य, मूर्त नहीं है, अनुभूति है। इस अमूर्त स्वरूप को व्यक्ति अनुभव के स्तर पर जीता है। यह अनुभव इंद्रियगम्य न होकर बुद्धिगम्य होता है।

भारतीय समाज में मूल्य विघटन की समस्या बहुत बाद में उत्पन्न हुई; क्योंकि औद्योगिक और यांत्रिक विकास की प्रक्रिया भी यहाँ बहुत बाद में ही शुरू हुई। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए जिस नये यांत्रिक युग का सूत्रपात हुआ, उससे परम्परागत जीवन-मूल्यों और नवीन जीवन-मूल्यों के बीच टकराहट शुरू हो गई। भारत में आजादी के पश्चात् युवा जनमानस की आशाएँ, निराशाओं में बदल गयी और मूल्यों के क्षेत्र में भारी परिवर्तन आया जो वास्तव में आश्चर्यजनक ही नहीं, शोकदायक भी है।

पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण

उपभोक्ता संस्कृति के विकास ने मनुष्य के आचार-विचार, जीवन-आदर्श और लक्ष्य को पूरी तरह बदलते हुए उसे अर्थप्रधान, भौतिक और आत्म-केन्द्रित बनाया है। भोग की आवश्यकता एक प्रकार का फैशन बन गयी है। इससे समाज अंदर ही अंदर खोखला होता जा रहा है। उपग्रह टी.वी.चैनलों पर धारावाहिकों के रूप में परोसी जाने वाली स्वदेशी-विदेशी संस्कृति समाज में स्वार्थी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देती है। विज्ञान ने मानव को तर्क शक्ति दी है अत: धर्म, दर्शन, राजनीति, संस्कृति सभी को विज्ञान की कसौटी पर कसा जाने लगा है। मनुष्य सुविधा-भोगी हो गया है और अपने-आपको विज्ञान के सुपुर्द करके निश्चिंत होने का भ्रम पाल रहा है परन्तु वास्तव में उसकी परेशानियाँ बढ़ गई हैं क्योंकि परंपरागत मूल्य खंडित हो गए हैं और परंपरागत आस्थाओं का महत्त्व कम हो गया है।

शिक्षा प्रणाली

भारत कुशल वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं चिकित्सकों को उत्पन्न तो कर रहा है परन्तु भारतीय शिक्षा प्रणाली में जीवन को उदात्त बनाने वाले मूल्यों का समावेश न होने के कारण समाज में मूल्यहीनता के चिन्ह बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। भौतिकवादी सोच ने इन मूल्यों का स्थान ग्रहण कर लिया है।

आज व्यक्ति पारिवारिक संबंधों के प्रति उदासीन होता जा रहा है। पहले एक रोटी को बाँट कर सब खा सकते थे परंतु आज 'कमाये कोई और खाये कोई' यह सिद्धान्त मान्य नहीं है। प्रेम, विश्वास आदि जीवन-मूल्यों को उपेक्षित किया जा रहा है, परिणामत: निकटतम संबंधों – पति-पत्नी, माता-पिता, पिता-पुत्र, भाई-बहन, गुरु-शिष्य आदि में अविश्वसनीयता घर कर गई है। व्यक्ति भौतिक सुखों की अंधी दौड़ में सारे जीवन-मूल्यों को कुचल कर आगे बढ़ना

चाहता है इसीलिए इस युग को विद्वानों ने मूल्य-संकट का काल कहा है। मूल्य कभी बदलते नहीं या नष्ट नहीं होते लेकिन उनमें विकास या सुधार जरूर हो सकता है। सत्य, अहिंसा, न्याय, समता, मानवता आदि मूल्य हर युग में जिंदा रहेंगे परंतु इनका प्रभाव कम-अधिक हो सकता है।

मूल्य निर्माण की प्रकिया

मूल्यों का निर्माण अचानक नहीं होता है। मूल्यों का निर्माण और विकास समाज के साथ हुआ है। मूल्यों का निर्माण मानव निर्मित धारणाओं से होता है। पहले मनुष्य चिंतन करता है, चिंतन से विचार बनते हैं, विचार धारणाओं को जन्म देते हैं। जब ये धारणाएं पुष्ट हो जाती हैं, तब उनके द्वारा मूल्य-सृजन होता है।

समाज को सुव्यवस्थित और संपन्न बनाने के लिए जीवनमूल्यों की अनिवार्य आवश्यकता होती है। जीवन-मूल्य जीवन का आधार हैं। इन मूल्यों का जितना अधिक समावेश होगा, जीवन उतना ही समृद्ध, सफल और सुखमय होगा।

नए जीवन मूल्य आरंभ में किसी एक व्यक्ति अथवा समूह तक ही सीमित रहते हैं, फिर उस नवीन विचार-दृष्टि का जब समाज में प्रचार-प्रसार हो जाता है तो वे मूल्य धीरे-धीरे सर्वमान्य हो जाते हैं। अगर बचपन से ही अच्छी पस्तकें पढ़ने का शौक हो तो मनुष्य भविष्य में जीवन-मूल्यों को सहजता से स्वीकार कर सकता है। मूल्य निर्माण में सहायक कुछ बातें –

माता-पिता की भूमिका – हम हर चीज को खरीद सकते हैं लेकिन संस्कार नहीं। कार्य व्यस्तता की वजह से माँ-बाप अपने बच्चों को पालना-घर भेज देते हैं। पालना-घर में मूल्य आधारित गीत सुनाने वाले दादा-दादी नहीं हैं। परिणामत: बच्चों की जुबान पर फिल्मी गीत आने लगते हैं, जिससे हम उनके भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं। गीत, संगीत, फिल्म, साहित्य एवं संस्कृति में आये बदलाव के कारण मूल्यों में भी परिवर्तन होता जा रहा है। इसलिए बच्चों के उत्तम भविष्य के लिए माँ-बाप उन्हें अधिक से अधिक समय और प्यार दें। जीवन में मूल्यों के निर्माण में माता-पिता, अध्यापक आदि का बहुत योगदान रहता है।

संबंधों में सच्चा प्यार – आज तंत्रज्ञान के युग में 'यूज एण्ड थ्रो' की मानसिकता बढ़ने लगी है। जिस चीज से लाभ प्राप्त है, उसे ही पास रखा जाता है, नहीं तो उपयोग के बाद फेंक दिया जाता है। यह मानसिकता सम्बन्धों पर भी हावी हो गई है। जब तक वे उपयोगी लगते हैं तब तक उन्हें बनाए रखते हैं, जैसे ही उपयोगिता समाप्त हो जाती है, संबंध भी समाप्त हो जाते हैं। मूल्यों की रक्षा के लिए संबंधों में एक-दूसरे के साथ सच्चा प्यार रखें। सच्चे प्यार का अर्थ है आत्मिक स्नेह और शुभभावना।

इच्छाओं को कम करें – मूल्यनिष्ठ जीवन शैली के लिए अत्यधिक खर्च से बचें। अनुचित तरीके से एवं बेईमानी से अपने पास वस्तुओं को बढ़ाने के प्रलोभन से मुक्त रहें।

परमात्मा से सर्व संबंध जोड़ें – समस्त मूल्यों का स्त्रोत परमात्मा है इसलिए उनसे सर्व संबंध स्थापित करें। जो भी संस्कार या आदतें मिटानी हैं उन्हें पिता परमात्मा को समर्पित कर दें, फिर उन्हें ग्रहण न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करें।

नेतागण – मूल्यों के निर्माण एवं विकास में नेतागण का महत्वपूर्ण हाथ होता है। वे अपने विचारों, अभिप्रायों, भाषणों से हजारों, लाखों व्यक्तियों का मार्गदर्शन करते हैं। जनता उनके विचारों द्वारा मूल्यों को सहज स्वीकार कर सकती है।

सत्संगति – समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए सत्संगति उतनी ही आवश्यक है जितनी कि जीवित रहने के लिए रोटी और कपड़ा। बाल्यकाल से अच्छी संगति मिलने से व्यक्ति अपना जीवन मूल्यनिष्ठ बना सकता है।

आत्म सम्मान – आत्म सम्मान की रक्षा के लिए आत्म-विश्वास अर्थात् आत्मा पर विश्वास बना कर रखें। इसके लिए अहंकार और स्वार्थ को त्याग दें। बहुत से लोग स्वार्थ के लिए झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं और कौड़ियों के लिए धोखा दे डालते हैं। ऐसे व्यक्ति से आत्म सम्मान कोसों दूर भाग जाता है। ऐसी बातों से दूर रहकर आत्मा को निष्कलंक और पवित्र बनाएँ। ❖

जीवन के आदि, मध्य और अन्त का सार

छुपा है 'ओमशान्ति' में

रविन्द्र अरजरिया, वरिष्ठ पत्रकार एवं मीडिया सलाहकार, नोएडा

अनुभव, अनुभूति और आत्मदर्शन के उपदेश सुन-सुनकर मैं ऊब चुका था। कर्मकाण्डों से लेकर दर्शन तक के विद्वानों के मर्म को टटोलने के बाद अध्यात्म के प्रचलित सिद्धान्तों को खंगालने का प्रयास किया किन्तु कुछ ज्यादा हाथ न लगा। यह मानसिक भूख कब जाग्रत हुई, पता ही नहीं चला। जब भी एकांत में होता, विचारों का प्रवाह शिथिल होते ही शाश्वत सत्य तक पहुँचने की जिज्ञासा बलवती हो उठती।

मना नहीं कर सका

अचानक सफेद परिधान में पवित्रता की प्रतिमूर्ति बनी कुछ महिलाएँ आमंत्रण लेकर आवास पर आयीं। उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माउण्ट आबू स्थित मुख्यालय में होने वाले नेशनल मीडिया कान्फ्रेन्स-2017 के आमंत्रण सहित प्रसाद, साहित्य और टेबल कलेंडर आदि भेंट किये। निवेदन इतना भाव-भरा था कि कार्य की व्यस्तता के बाद भी मना नहीं कर सका। उन्होंने बिना देर किये एक प्रपत्र हमारी ओर बढ़ा दिया। हमने कब और कैसे उसे भर कर वापिस कर दिया, पता ही नहीं चला। उनके प्रस्थान के बाद मानो चेतना ने दस्तक दी, तब कहीं जाकर उस अनजाने से सम्मोहन से बाहर निकल सका। सामने रखी मेज पर शिव बाबा का साहित्य हमें अपनी ओर आकर्षित करने लगा। कुछ पुस्तकों के पन्ने पलटे। समय बढ़ता गया। दैनिक कार्य अपनी यांत्रिक गति से चलते रहे। इस मध्य ब्रह्माकुमारी आश्रम से निरंतर कान्फ्रेन्स में जाने की याद दिलाई जाती रही। तीन बार तो वहाँ के प्रतिनिधियों ने स्वयं आकर स्मरण कराया।

आश्चर्य की सीमा नहीं रही

निर्धारित तिथि को हम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय शान्तिवन पहुँच गये। मीडिया कोआर्डीनेटर से पहली मुलाकात हुई। न्यू डायमण्ड भवन में आवासीय व्यवस्था देने के साथ ही उन्होंने निर्धारित कान्फ्रेन्स का स्वरूप, मुख्यालय की दिनचर्या सहित सभी आवश्यक जानकारी दी। तभी यहाँ की मीडिया विंग के वाइस चेयरमैन भ्राता आत्मप्रकाश सहित अनेक वरिष्ठजनों ने स्वागत-कक्ष में प्रवेश किया। हम अपने आवंटित आवास की ओर जाने के लिए उठते कि उसके पहले उन्होंने अपना परिचय देते हुए हमें आवास तक पहुँचाने के लिए स्वयं को प्रस्तुत कर दिया। आश्चर्य की सीमा नहीं रही। एक बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय समाजसेवी संस्था का वरिष्ठ पदाधिकारी और सादगी का अम्बार लिए सहज निवेदन! हम ठगे से रह गये। बैटरी से चलने वाली गाड़ी से उन्होंने स्वयं हमें आवास तक पहुँचाया। उनके कुछ अन्य सहयोगी भी साथ थे। साफ-सुथरा, सुसज्जित और सुव्यवस्थित आवास देखकर दिल खुश हो गया।

शरीर और आत्मा की नई व्याख्या

मानव कर्म को सुकर्म में परिवर्तित करने के लिए ही सहज राजयोग को जीवन में चरितार्थ करना पड़ता है। देहभान के भ्रम से निकलकर हमें आत्मभान में स्थित होना पड़ता है। कई बार हम कहते हैं कि मन मानता ही नहीं है, हम तो अमुक कार्य करना चाहते हैं परन्तु कर नहीं पाते। हम चाहते हैं यानी आत्मा चाहती है परन्तु कर नहीं पाते

यानि शरीर करता ही नहीं है। कुल मिलाकर मतलब यह हुआ कि शरीर और आत्मा दोनों अलग-अलग हैं। अपने ढंग की इस अलग व्याख्या ने हमारी सोच को बदलना शुरू कर दिया।

मन को मोह लिया मृदुल व्यवहार ने

अध्यात्म को नये अर्थों में स्थापित करने के लिए संस्था द्वारा बनाये गये इस अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय को गहराई से जानने की इच्छा तेज होती चली गई। भोजनालय से लेकर विभिन्न विभागों के कार्यकर्त्ताओं का मृदुल व्यवहार, विनम्रता से भरा वार्तालाप और अपनत्व भरे संस्कारों ने मन मोह लिया। सेमिनार के प्रत्येक सत्र में बहुत तन्मयता के साथ भागीदारी दर्ज की। सभी धर्मों में स्थापित ज्योति, प्रतीक और अप्रत्यक्ष परमात्मा की उपस्थिति के विश्लेषण ने 'सबका मालिक एक' के आदर्श वाक्य को पूरी तरह स्थापित कर दिया। सुनने की शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, सहन शक्ति, स्वीकारने की शक्ति, सामंजस्य की शक्ति, परिवर्तन की शक्ति आदि की व्याख्याओं ने जीवन जीने की कला में नया अध्याय जोड़ दिया। एकाग्रता का वातावरण निर्मित करने वाले संगीत ने अमृतवेले के ध्यान तथा प्रात:कालीन सत्रों को चरम की ओर पहुँचाने में पहली भूमिका का निर्वहन किया।

मैं कौन, मेरा कौन

जीवन के 102 वसंत पूरे कर चुकी दादी जानकी द्वारा 'मैं कौन और मेरा कौन' से प्रारम्भ होने वाले संबोधन में 'ओमशान्ति' को ही सार रूप में स्थापित किया गया। उन्होंने परमपिता परमात्मा को पिता मानने पर जोर देते हुए कहा कि निश्चय करो और निश्चिंत रहो। सर्वशक्तिमान परमात्मा ही जब हमारा पिता है तो फिर हम उसके पुत्र निर्बल, असहाय और लाचार कैसे हो सकते हैं? जीवन एक नाटक है जिसे करने के बाद हम सब आत्माओं को परमधाम, अपने पिता के पास जाना है। उस यात्रा के लिए हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए, न जाने कब बुलावा आ जाये।

ज्ञान सरोवर जाना हुआ। वहाँ पर दादी जी से मुलाकात हुई। उन्होंने शाश्वत सूत्र दिये जिनको आत्मसात करके परमसत्य को समझना सरल हो गया। सत्य को समझना ही नहीं बल्कि जीना पड़ता है, तभी वह जीवन के कैनवास पर अनुभूतियों की तूलिका से उभर पाता है।

गागर में सागर

वापसी का पल निकट आता जा रहा था परन्तु मानसिक भूख अभी पूरी तरह शांत नहीं हुई थी। जीवन के झंझावातों को पूर्व निर्धारित नाटक का अंग मानते हुए तैयारी शुरू कर दी। मन में सेमिनार की समीक्षा और भविष्य की सेवा की योजनायें एक साथ चलने लगी। आध्यात्मिक सत्रों में विषय-विशेषज्ञों ने गागर में सागर भरने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

अविस्मरणीय अवसर

व्यवसायिकता को यदि हाशिये पर रख दें तो निश्चित ही आध्यात्मिक दृष्टि से शाश्वत सत्य को जीने का यह एक अविस्मरणीय अवसर था जिसमें मिली नई दिशा और अनुभव को हमने अपने अनेक सहयोगियों, साथियों और सम्माननीयों के साथ साझा किया और निरंतर करते रहने का प्रयास करूँगा। अब प्रतीक्षा है भविष्य के उन पलों की जिनमें इस संस्था को और करीब से देखने, समझने और जीने का अवसर मिले। ❖

नम्र निवेदन

ईश्वरीय ज्ञान में आने के बाद जिन भाई-बहनों के निजी जीवन में, पारिवारिक जीवन में या सामाजिक जीवन में विशेष सकारात्मक परिवर्तन आए हैं वे अपना अनुभव हस्तलिखित या टाइप कराकर और अपनी निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर करवाकर ज्ञानामृत कार्यालय में भेजें। अनुभवों द्वारा दूसरों को प्रेरित करने की ईश्वरीय सेवा अवश्य करें। डाक पता एवं ई-मेल आई.डी. अंतिम पृष्ठ पर है।

रूहानी ज्ञान ने दिया जेल में भी सुकून

ब्रह्माकुमार उज्ज्वल, सेन्ट्रल जेल, अलवर (राजस्थान)

मैं भिवाडी में नौकरी करता था। मेरे पिताजी को कैंसर हो गया था। उनके इलाज के लिये बहुत पैसे की जरूरत थी। मेरे वेतन से इलाज नहीं हो सकता था। मैंने लालच में आकर अपराध कर डाला और अलवर जेल में 01.03.2014 को आ गया। लालच रूपी विकार के वश उठाये गये कदम के कारण मुझे दुख सहन करना पड़ा। जिनके इलाज के लिये मैंने यह गलत कदम उठाया, वे भी इस दुनिया में अब नहीं रहे।

मिटने लगे दुख, चिन्ता, कष्ट

मैं जेल में दुखी और चिंतित रहने लगा। इसी बीच ब्रह्माकुमारी बहनों का जेल में आगमन हुआ। उनके दिये ईश्वरीय ज्ञान को मैंने सुना और बहुत प्रभावित हुआ। शिवबाबा का यह ज्ञान बहुत तर्कसंगत लगा। ज्ञान को पूरी तरह धारण करने से मेरे सभी प्रकार के दुख, चिन्ता, कष्ट मिटने लगे और जेल में भी मुझे खुशी, उमंग और शक्ति का अनुभव होने लगा। अब मैं अमृतवेले 2 बजे से 5 बजे तक योग लगाता हूँ। दिनभर बाबा की याद में रहता हूँ। पहले मैं मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत कमजोर रहने लगा था, मुझे खाना अच्छा नहीं लगता था मगर अब यही खाना जब मैं शिवबाबा को अर्पण कर, उनकी याद में खाता हूँ तो बहुत अच्छा लगता है। मैं अपनी बूढ़ी माँ की खबर नहीं ले पाता था लेकिन अब मेरे वकील ही मुझे उनकी राजी-खुशी बता देते हैं। ये सब शिवबाबा का ही कमाल है।

योग के प्रयोग

शिवबाबा इस संगमयुग पर ब्रह्मा बाबा के तन के द्वारा अवतरित हुए हैं हम सब आत्माओं का उद्धार करने, अपार खुशी, आनंद देने। मेरा केस भी धीरे-धीरे निर्णय पर आ गया है। जबकि मैं अपनी पूरी फीस भी नहीं दे पाया हूँ, फिर भी शिवबाबा की दुआ से मेरे वकील बहुत अच्छी तरह से काम कर रहे हैं। मुझे चारों तरफ से खुशी का अनुभव हो रहा है। मैंने जनवरी मास में प्रतिज्ञा ली थी कि एक बाबा, दूसरा न कोई और तब से ही मुझे बाबा की मदद के विशेष अनुभव होने लगे। मैंने कैदी भाइयों पर योग के प्रयोग किये और इससे उन्हें बीमारी में, मानसिक तनाव में और केस में आश्चर्यजनक फायदा हुआ।

हर पल महसूस होती हैं बाबा की शक्ति की किरणें

हम दो भाइयों के केस के निर्णय का दिन गुरुवार था। मैं बाबा को अपने साथ लेकर गया था कि बाबा जो करेंगे, अच्छा ही करेंगे। हमारे रिहा होने के पूरे-पूरे अवसर थे, मगर दस साल की सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई। कोर्ट के सारे वकील दंग रह गये कि बहुत गलत हुआ पर हम दोनों भाइयों के चेहरे पर मुस्कान थी। जब हम जेल आये तो हमारे चेहरे की मुस्कान देखकर सभी कैदी भाइयों ने समझा कि ये बरी हो गये हैं। जब हमने बताया कि हमें दस साल की सजा हो गई है तो कोई भी विश्वास नहीं कर रहा था क्योंकि हमारे चेहरे पर शिकन तक नहीं थी। हम तो जानते थे कि खुशी के सागर हमारे साथ हैं, इसमें भी हमारा कोई कल्याण छिपा हुआ होगा। शायद बाबा हमारी परीक्षा ले रहे हैं, हमारा निश्चय और भी बढ़ गया। हमें लंगर की सेवा में लगाया गया है जिसमें सुबह से शाम तक बहुत मेहनत करनी पड़ती है जो हमने अपने जीवन में कभी नहीं की। बाबा की शक्ति की किरणें हर पल महसूस होती रहती हैं जिसके कारण इतनी गर्मी में कार्य करते भी हम

शेष पृष्ठ 18 पर

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▸▸ फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये : **E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org**
Website : gyanamrit.bkinfo.in **Ph. No. : (02974) - 228125**

1.धरान (नेपाल)- प्रदेश नम्बर एक के मुख्यमंत्री भ्राता शेरधन राई को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. गीता बहन। **2.आगरा (कमला नगर)**- शिवजयन्ती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शीला बहन, आगरा यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति भ्राता अरविंद दीक्षित, ब्र.कु. शीला बहन, रामकथा वाचक अरविंद महाराज तथा सी.जे.एम. बहन कविता मिश्रा। **3.बदलापुर**- अभिनेता भ्राता सुनील शेट्टी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. आरती बहन। **4.कोटा**- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिरिक्त जिलाधीश बहन सुनीता डागा, देश-विदेश में अनेक स्वर्णपदक विजेता खिलाड़ी अरुंधती बहन, ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा अन्य। **5.मथुरा**- 'मूल्य शिक्षा तथा आध्यात्मिकता' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं ब्र.कु. सुषमा बहन, ब्र.कु. कुसुम बहन, जी.एल.ए. यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति डॉ.डी.एस. चौहान तथा ब्र.कु. उमा बहन। **6.नागपुर (बसंत नगर)**-शिवजयंती महोत्सव में महाराष्ट्र के राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त विधायक भ्राता सुधाकर देशमुख। मंचासीन हैं नगरसेवक भ्राता जगदीश ग्वालबंशी, राजनीति कमेटी के अध्यक्ष भ्राता रमेश जोशी, नगरसेविका बहन माधवी बराडे, ब्र.कु. मनीषा बहन तथा ब्र.कु. रक्षा बहन। **7.पटना (कंकड़बाग)**- शिवजयन्ती महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए पूर्व विधायिका बहन उषा विद्यार्थी, खाद्य तथा उपभोक्ता संरक्षण मंत्री भ्राता मदन साहनी, ब्र.कु. ज्योत्स्ना बहन तथा अन्य। **8.करनाल (सेक्टर-7)**- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उपकुलपति भ्राता राधेश्याम शर्मा, ब्र.कु. डॉ. सविता बहन, ब्र.कु. चक्रधारी बहन, प्रिंसिपल वैज्ञानिक डॉ.डी.डी. शर्मा, आई.पी.एस. बहन डॉ. सुमन मंजरी, ब्र.कु. प्रेम बहन तथा अन्य। **9.मुंबई (माहीम, पूर्व)**- महिला दिवस कार्यक्रम पश्चात् भारतीय महिला ट्रस्ट की सी.ई.ओ. बहन श्यामला नाथ, प्रो.डॉ. ज्योति पाटील, पी.एस.आई. बहन एस. राजीगरे, अगमेट इन्स्टिट्यूट ऑफ फैशन टक्नोलोजी की प्रशासिका बहन सायरा अहमद शेख, पार्षद बहन एस.एस. शेवर तथा ब्र.कु. उज्ज्वला बहन समूह चित्र में।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : April, 2018.

भैरहवा (नेपाल)-
नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता के.पी. ओली जी को ईश्वरीय सौगात तथा सन्देश देते हुए ब्र.कु. शान्ति बहन तथा ब्र.कु. भूपेन्द्र अधिकारी।

ओ.आर.सी.-
अखिल भारतीय वरिष्ठ नागरिक महासंघ के प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं विचारक डॉ. वेद प्रताप वैदिक, अखिल भारतीय महिला परिषद् की अध्यक्ष बहन राकेश धवन, अखिल भारतीय वरिष्ठ नागरिक महासंघ के अध्यक्ष भ्राता डी.एन. चापके व उपाध्यक्ष बहन अलका व्यास, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा बहन तथा ब्र.कु. चक्रधारी बहन।

अहमदाबाद (इंडिया कालोनी)-
नवनिर्मित भवन 'ज्ञान मान सरोवर' के उद्घाटन अवसर पर केक काटते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. भानु बहन, गुजरात राज्य आरोग्य मंत्री कुमार भाई कानाणी, विधायक वल्लभ भाई काकडीया तथा अन्य।

रायपुर (शान्ति सरोवर)-
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए छ.ग. की महिला, बाल विकास एवं समाज कल्याण मंत्री बहन रमशीला साहू, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष बहन हर्षिता पाण्डे तथा छ.ग. बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष बहन प्रभा दुबे, ब्र.कु. कमला बहन, ब्र.कु. सविता बहन तथा ब्र.कु. नीलम बहन।